

'नम्रता'

प्रेमी : भगवान्, Situation में नम्रता नहीं निकलती है?

भगवान् : भंगी है क्या? जमादार है क्या? Friend देखेंगे या औरत या बेटा देखेंगे, हम बोलते हैं तुम अपने बच्चों से इतना मज़ा नहीं लेते हैं, जितना हम लेते हैं। समदृष्टि के सिवाय प्रेम नहीं होता। तुम अलग-२ भाव से देखते हैं। हम दूसरे को नहीं देखेंगे, वो अपने को धोखा देवे या सुख देवे। जिसमें मन रखेंगे तो मरने के समय तुमको दुख होगा ना, पर प्रेम का सौदा करें। हमारा राग द्वेष है ही नहीं। आनन्द ही आनन्द है, शान्ति ही शान्ति है।

प्रेमी : भगवान्, निभयता से नम्रता कैसे होवे?

भगवान् : तुम इधर से नम्रता, निभयता सीखके जायेंगे, तो बोलेंगे कि ज्ञान में मेरा अपना कोई नहीं है, मेरे को परवाह नहीं है, मेरे को अपना आनन्द है, तो निभयता है, पर साथ में नम्रता भी है। वैसे कोई गुस्सा करे, प्यार ना करे, पर पहले प्यार करेंगे फिर गुस्सा करें क्योंकि वो प्यार की आदत में आ जाता है। तो उसकी आदत कैसे निकालेंगे? कोई मतलब होगा तभी गुस्सा करेंगे, तुम खाली प्यार के लायक है, जो उम्मीद रखके आते हैं प्यार की।

प्रेमी : भगवान्, Practical में इतनी नम्रता, प्यार से बात नहीं होती है?

भगवान् : खाली होगा तभी होगा, अगर खाली नहीं है तुम, कोई भी अन्दर में भेद है, तो तू प्यार नहीं कर सकेगा, समझो दो सहेली इधर आती हैं तो हम उनको Cross करते हैं कि तुम अलग-२ निश्चय करो और वो अलग निश्चय करे। तुम अलग रास्ता पकड़ो, वो अलग रास्ता पकड़े, तभी तुमको ज्ञान होगा। दो से ज्ञान नहीं होता है। खाली होता है, भर जाता है और खाली नहीं है तो उसमें सेवा नहीं होती है। कौन खाली रहता है? कुछ न कुछ अन्दर पड़ा रहता है। तुम बोलते नम्रता नहीं होती है, फिर तो झूठ है, तू झूठी है। झूठा टिके ना कोई। नम्रता तो पहले करने की है। अज्ञान पहले निकालने का है, तो क्यों न हम झुक सके। हमारे से हुआ क्या है? हम तो कुत्ते को भी झुक सकते हैं। कुत्ते में भी वो ही है। मनुष्य में भी वो ही है। सब में वो ही है। हम तो झुक सकते हैं।

प्रेमी : भगवान्, ये अच्छा लगा कि अगर नम्रता नहीं कर सकते तो अपने से पूछें क्या हुआ है तेरे से?

Contd... 2.

भगवान् : मैं बात करती हूं, दुख होता है कि ये मनुष्य कैसे ऐसे सिर उचौं करके चलता है। ऐसे सिर क्यों करता है? झुकते क्यों नहीं? झुकने से उठना है। मनुष्य मनुष्य को नहीं झुकता है, ये क्या बात है, जो सत् में हमारा लक्षण होवे। देवी देवता का तो लक्षण धारण करो। भगवान् तो पीछे है, पर देवी देवता का लक्षण लिखा पड़ा है। दैवी सम्पर्दा वाला कैसे रहता है? सबकी भलाई में रहता है। गलत शब्द नहीं बोलता है।

ओम

'पुरुषार्थ'

जिस दिन से ज्ञान सुना तो उस दिन से मेरी Link गुरु से, गुरु की वाणी से जुड़ी रहे। तो Link ऐसे जोड़के और उपर हो जाओ, जो संसार और संसार की बातें हमको दिखे ही नहीं। यही सच्चा पुरुषार्थ है कि एक ही सच्चा रास्ता पकड़ना सत्तगुरु का। निमत मात्र संसार चलेगा, पर Foundation है कि मैं वो रास्ता भगवान का पकड़ूँ दूसरा ना पकड़ूँ। सीधे रास्ते पर सिर्फ चलते चले। सब अभ्यास करना चाहिए, ए शरीर अभी तू ऐश करता है - अभी तू मरेगा तो क्या ऐश करेगा? जन्म मरण मिलेगा। तू पुरुषार्थ कर तो तुम्हारी वृत्ति बहुत अच्छी होगी। पुरुषार्थ ही दैव है।

प्रेमी : भगवान उत्तम जिज्ञासू के लिए क्या पुरुषार्थ है?

भगवान : वो सबकी भलाई में रहता है, उत्तम जिज्ञासू सबको प्रेम करता है। किसी का सपने में भी विकार नहीं देखता है। वो सपने में भी जागता है। सपना आता है तो समझो अन्दर मन है, वो ही जन्म मरण का कारण है। तो क्यों न हम दिन में मन को नाश करे कि ये क्या देखा? कुछ भी सत् नहीं है। ऐसे दिन को तुम मन को नाश करते आओ, जो तुम्हारे में मन रहे ही नहीं, जो फिर रात को सपना आए।

प्रेमी : भगवान, पुरुषार्थ करते समय करतापन आ जाता है।

भगवान : करतापन किसके लिए आता है? देखो तू कुछ नहीं कर सकता है, जो कुछ होता है उसके हुक्म से होता है, तू कुछ नहीं कर सकता है।

प्रेमी : सत्संग में लग्न बढ़ाने के लिए कौनसा पुरुषार्थ है?

भगवान : सब अभ्यास करना चाहिये कि ऐ शरीर तू क्यों ऐश करता है। वो शोंक की बात है। मन को बताएं कि जन्म-२ में धक्का खाया है। मेरे में समाने का है तो बूँद बनो। ज्ञान के लिए पुरुषार्थ माना Be Still, क्यों कि भगवान है Pathless Land तू भगवान को ढूँढने जाएगा तो कहीं भी नहीं मिलेगा, पाण दूर हो जाएगा। पर अगर अपने में ही जानेगा तो पुरुषार्थ कौनसा करेगा। हाथ की घड़ी को आईना लेके थोरई देखना है, ऐसे ज्ञान के लिए क्या करना है, वो तो प्राप्त है।

प्रेमी : अक्षय आनन्द का क्या पुरुषार्थ है ?

भगवान : अक्षय आनन्द के लिए पूरा पुरुषार्थ है 'मैं ना'। न इन्द्री के सुख न दुनिया के सुख, कोई भी सुख नहीं लेना है। मैं सुख स्वरूप होके सुख को क्यूँ छंटूँ?

प्रेमी : भगवान्, कौनसा पुरुषार्थ है जो भगवान् भक्त को याद करे।

भगवान् : भक्त जभी तुम बनेंगे तो याद करेगा। तुम दूसरा देखेगा तो मैं याद कैसे करेगा? भक्त को तो चिंता नहीं कि भगवान् मेरे को याद करता है या नहीं, सब कुत्ता दूसरा देखते हैं - कुत्तों को नौद नहीं आती है। मालिक भली जागे भी, तो भी कुत्ता पूरी रात सोता नहीं है, कि मालिक के पास चोर न आ जाए। तुम बताओ सारे दिन मैं तुम दूसरा देखते हैं या नहीं तो भक्त कैसे हुआ? भक्त सच्चा वो ही है जो भगवान् के सिवाइ कुछ ना देखे। आज से ये Practice करो।

प्रेमी : भगवान्, आप हमें मिले हैं ये हमारा पूर्व जन्म का फल है या पुरुषार्थ है?

भगवान् : हम तुम्हें मिले पड़े थे, तुमने आखँ अभी लिया है।

प्रेमी : भगवान्, तुरिया पद में पहुंचने के लिए कौनसा पुरुषार्थ है?

भगवान् : तुरिया पद तुमने देखा है कि किसको बोलते हैं? जब तक वाणी सुनना, बोलना बंद नहीं किया है, मौन नहीं किया है, बाने ना वाणी सुनो ना सुनाओ पर मौन करो तो वो 'तुरिया पद' है।

प्रेमी : गुरु के सिवाइ किसी ने सुखी नहीं किया है।

भगवान् : सो वो ही तुम्हारा कर्म है, तुम्हारा ही जन्म है। एक को मनुष्य का जन्म दिया, एक को कुत्ते का जन्म दिया। तो तू हर जन्म में पुरुषार्थ करते करते उस जूणी से छूटता है। ये सब का पुरुषार्थ है। अभी कोई अच्छा आदमी है और कोई तो जान बूझकर भी पाप कमाता है।

प्रेमी : भगवान्, सत्संग में शान्ति मिल रही है, आत्मा का निरचय कैसे हो?

भगवान् : सत्संग से उद्धार होता है। धीरे धीरे हमको Level आ जाती है। सत्संग महान है। सत्संग से सब फल मिलता है, जो भी चाहिए।

प्रेमी : सत्संग मीठा लगता है उसकी रक्षा के लिए कौनसी सावधानी रखनी चाहिए?

भगवान् : As the company so the colour, जो सत्संगी होता है वो भी मेरे से उंचा हो। मेरे से नीचा होगा तो मैं उनको सुनाऊं। ये नहीं कि वो कोई गलत शब्द बोले या परचिन्तन करे, तो मैं उनसे बिल्कुल मिलने न जाऊं।

प्रेमी : भगवान्, आप ने वाणी में कहा जिसका आखिरी जन्म हो वो ये दम लगा सकेगा, वासना काटने का। तो पुरुषार्थ से ये जन्म आखिरी नहीं हो सकता है?

भगवान् : हम जब ऐसे तीन किस्म के लोग बोलेंगे तभी तो Improvement करेंगे। कोई Born great है, किसी को योग भ्रष्ट को गुरु देता है, कोई इधर आके शुरू करता है। अगर शुरू करता है तो Double promotion हो सकती है। सब पुरुषार्थ से होता है।

ओम

प्रेमी : भगवान्, आजकल मैं 'योग वशिष्ठ' पढ़ रहा हूं। पढ़ते-२ मेरा दिल उचाट हो गया है। सच में जगत से खटाई आती है, भागने को ही चाहता है, ये क्या है? क्या ये ही वैराग है भगवान्।

भगवान् : वैराग माना संसार से भागना नहीं है। यह भी अच्छा है जगत से खटाई आई है। सच और झूठ की परख चाहिए। किसी भी चीज़ में इच्छा ना रहे, पर किसी भी प्राणी मात्र से प्रेम बहुत बढ़े, किसी से भी द्वेष नहीं रहे। सब भगवान ही है। ब्रह्म ही ब्रह्म हर जगह समायो...। संसार से भागना नहीं है, सब में भगवान देखना है।

प्रेमी : सब कहते हैं कि माया बड़ी दुष्कर है, माया में रहकर कभी मुक्ति प्राप्त नहीं होगी। माया भुलाने वाली है।

भगवान् : ऐसे ही तुम सादे लोग हैरान रह जाते हैं, लेकिन आत्मा याद नहीं है। अगर तुम आत्मा में है तो माया तुमको कभी भुला नहीं सकती। माया को सत्ता देनेवाला आत्मा में नहीं है। जब ऐसा अनुभव है - तुम सेठ होकर नौकर को Control में नहीं रखता है तो तुम लायक नहीं है। माया को सत्ता अज्ञानी देता है, मन देता है।

प्रेमी : भगवान्, ब्रह्मकार वृत्ति कैसे आये? उसका कोई साधन?

भगवान् : तुम अपना मौत करो। हर बात में से आसक्ति निकालने की है।

प्रेमी : भगवान् क्यों नहीं रोकता कि तुम चोरी नहीं करो, ठगी पाप नहीं करो।

भगवान् : भगवान् ने हर इन्सान को free छोड़ा है, तो कहो भागता है। भगवान् पाँच तत्व का 'शरीर बनाकर तुमको फेंक दिया है। तू शरीर में है तो गेंद की तरह नाचता रहेगा।

प्रेमी : भगवान से माफी माँगना चाहिए या नहीं।

भगवान् : नहीं। तुम बोलो जो कुछ मेरे कर्मों से आया है वो धीरज रखकर क्यों न भोगूँ? क्यों माफी मांगूँ? क्यों इन्साफ मांगूँ? एक शाहूकार और नौकर का दृष्टात़.....।

प्रेमी : धृतराष्ट्र राजा के पास १०० बटेर अमानत रखकर गया, उसके रसोईये ने एक-२ कस्के राजा को खिला दिया, ऐसे में उसका कर्म बन गया। ऐसे तो सारे दिन में खाना खाते हैं, पानी पीते हैं, तो करोड़ो कर्म बनते हैं, उसके बारे में कृपा करके ठीक-२ बतायें?

Contd.. 2.

भगवान् : अनजानाई में भी अगर हाथ से बीज गिर गया तो भी जिधर उग जाता है, कर्म का फल निकल आता है। परन्तु ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। देह अध्यासी को कर्म का फल ज़रूर लगता है। देह अध्यास को छोड़ा तो आत्मा निर्लंप है। कर्म, सुकर्म से उसको क्या बन्धन। ज्ञान Catch किया तो तेरा अगला पिछला कर्म से मुक्ति है। पिछले पाप याद है क्या? जवाब दियो? भगवान् ने सब से पूछा। कितने जनों ने कहा कि "हौं भगवान्"। एक ने कहा "मैं निश्चय में हूं"। मुझ आत्मा से कोई पाप कर्म, विकर्म नहीं हुआ है। भगवान् ने कहा - तो बस।

प्रेमी : भगवान्, आठों पहर समाधि में कैसे रहूं?

भगवान् : (भगवान् ने सबसे कहा) जवाब दो। किसी ने कहा - हाथ काम में दिल यार में, ऐसे निश्चय में रहें, और ने कहा - अपना सारा दिन भगवान् में रहें। (पर भगवान् को यह भी ठीक नहीं लगा।) एक ने कहा समबुद्धि में रहें कि भगवान् ही है। वो ठीक है।

प्रेमी : भगवान्, किसको help चाहिए तो help नहीं करनी चाहिए।

भगवान् : तू इतना शक्ति वाला है तो करो help, पर help भी सच्ची होनी चाहिए। जो है ज्ञान धन। तू कब तक उसको पैसे का दान देता रहेगा। ये देखो- जहाँ दुनिया से फटे कंपड़े कम्बल कितनी फालतू चीज़ें आती हैं। मेरे को दुख होता है जब्ती रास्ते में Leprosy वाले, लँगड़े, लूले और गंदे ~~पाली~~ गंदे गंदे रहते हैं और तेरे जैसे उनको चार आने देकर भिखारी बना रहे हैं। क्यों नहीं उनको Government पर छोड़ दें, जो समर्थ है उनका बन्दोबस्त करके ठिकाने लगाने के लिए। तुमने अन्धा देखा और पैसा दान किया, माना तू ने अपने कर्म बनाये। इसलिए तू आत्मा के धर्म में रहो। पैसे टक्के की मदद से तू ने किसी की सेवा नहीं की पर उसको भिखारी बनाने में मदद की।

प्रेमी : जगत मिथ्या और ब्रह्म सत् है, इसके बारे में कुछ रोशनी डालिये।

भगवान् : जगत और जगदीश दोनों अनादि हैं; मैं और मेरा साया दोनों अनादि हैं। मगर जगत और साया दोनों मिथ्या हैं। जगदीश और मैं सत्य हैं।

प्रेमी : भगवान् हालत आवे तो।

भगवान् : मैं कर्म करूं और हालत ना आये, सो कैसे होगा?

प्रेमी : To See God is to be God वो कैसे?

भगवान् : तू अपने आप को देख नहीं सकता है तो जभी दूसरे की आँखों में देखेंगे तभी अपने आप को देखेंगे।

प्रेमी : भगवान् अपनी कोई वासना नहीं रहे, तब एक वचन दो कि अन्तकाल में कोई वासना ना जाये।

भगवान् : ज्ञानी के लिये अन्तकाल आता ही नहीं।

प्रेमी : भगवान्, कहते हैं बछरा बन के ज्ञान लेना है, सो कैसे ?

भगवान् : पहले बछरा गाय का दूध निकालता है, फिर भी गाय माता सब के लिये दूध देती है, ऐसे ही जितने मुखी भगत जो भगवान् के नज़दीक जाते हैं फिर भगवान् ज्ञान की गंगा बहाते हैं।

प्रेमी : मैं सर्व से कैसे न्यारा रहूँ?

भगवान् : तू सर्व क्यों देखता है? तू ही सर्व है।

प्रेमी : रस कैसे छोड़ें?

भगवान् : प्रभू ते भूलियों, व्यापन सभी रोग। मन में मैथन चालू रहे।

प्रेमी : कभी-२ विकार निकल आता है, कोई उपाय?

भगवान् : देह शरीर से नाता रखके बैठे हो तो क्या होगा? देह में तो है ही गंद। अन्दर में गंद है तो क्या Expect करते हो? गटर से कभी खुशबू निकल सकती है? तो यह गटर को बंद करना होगा जो गंद रहे ही नहीं।

प्रेमी : बोलते हैं जन्म-२ के संस्कार है।

भगवान् : वो संस्कार अब खत्म हो गये, जब तूने गुरु की शरण लिया। अब तेरा नया जन्म हुआ। जब तलक तुमको ज्ञान नहीं था तब तलक तू अगले पिछले जन्म के संस्कार अनुसार चलता था, अब नहीं। अब तो निश्चय से गुरु भगवान् की शरण लिया। अगले पिछले जन्म के सब संस्कार जल गये। अब से, ज्ञान की रोशिनी से, राहं में खड़े clear दिखने में आने से, तुमसे सावधान होकर कोई ऐसा वैसा कर्म होगा ही नहीं जो इस देह शरीर को कोई दाग लगे।

प्रेमी : ज्ञान भया तो कर्म ही नाश, कर्म काटे कैसे?

भगवान् : ज्ञान की सीढ़ी चढ़कर सब कर्म कट जाते हैं। गल्त खाना, गल्त चलना, गल्त बोलना, गल्त रहना। सब कुछ सही-२ रास्ता मिल जाता है, क्योंकि शरीर एक रथ है, सत्संग में लेकर आता है, तीर्थ यात्रा होती है, क्यों कि इधर ही निराकार की Address मिलती है, महिमा होती है। सारा

Time निराकार ही निराकार मन में बैठता है। संसार के गलत कर्म नाश हो जाते हैं।

प्रेमी : परीक्षा में जीतने का क्या उपाय है?

भगवान् : संब के सामने मंदिर की मूर्ति जैसे लगो।

प्रेमी : भगवान् ने दो भनुष्य क्यों बनाया?

भगवान् : इसलिये कि एक दूसरे के सामने झुक सके। नम्रता से अमृत खरीद सकता है। एक अहंकार करेगा तो भी उसको नम्रता से जीत सकता है, उसका अहंकार हटा सकता है। कोई तुमको धिक्कार करता है, उसको भी प्यार करो। सर्व में पेखे भगवान्।

प्रेमी : ईमानदार कौन है?

भगवान् : १. एक भी शब्द गल्त ना बोले। २. अपने को सुधारे, दूसरे को नहीं। ३. अपने साथ ईमानदारी करे। गुरु भगवान् को हमेशा हाजिर नाजिर जाने। ४. यह भूलना है कि मैं कुछ हूं।

प्रेमी : परचितन से कैसे छूटें?

भगवान् : तू मन को बोल तू मुखी है क्या? अनाज तो वो अपना खाता है फिर तू परचितन क्यों करता है? तूने दूसरे का कर्म विकार देखा तो तेरी भावी बन गई।

प्रेमी : भगवान् से क्या माँगें?

भगवान् : सदा ही जो तेरे संग रहे, वो भले ही माँगो, पर जो चीज़ है नाशंत वो क्यों माँगने का।

प्रेमी : भगवान् कभी-२ अभी भी विक्षेप आता है?

भगवान् : तुमने विक्षेप का दरवाज़ा बंद नहीं किया है। मेरी Gift है मौन। "मौन है सोन"। सब को मेरा इनाम है ये। ये मेरा वचन है। तू सारी दुनिया से मौन मेरहो। एक बार मौन होगा तो कोई तुम्हारे लिये नहीं बोलेगा कि इसने कुछ बोला। मौन! हमेशा के लिये मौन। मौन से कोई कर्म भी नहीं बनेगा। मौन ही सहज समाधि है। मौन में ज्ञान पक्का होगा। जो कुछ अंदर चले उसे ज्ञान देकर हमेशा के लिये मौन। जो मौन में है वो संसार से बचा हुआ है। मौन वाले के लिये कोई भी नहीं कहेगा कि उसने यह बोला। सारे दिन में तुम्हारा एक शब्द भी फिजूल नहीं निकले।

ओम

'पैगम्बर की तपस्या'

प्रेमी : आप अन्दर इतना खाली है उसके लिए आपने क्या तपस्या किया?

भगवान् : देखो मैंने बताया न, जिस दिन ज्ञान सुना तो एक दम जगत की प्रलय हो गई, जगत रहा ही नहीं। किससे मिलें, किसको देखें, क्या करें, किससे कर्म करे, ये भी मेरी इच्छा हो जाएगी। फिर हम लेन देन नहीं करेंगे जैसे मेरा उसमें कर्म न बनें। किससे मेरा कर्म न बनें ये डर था। एक कर्म करके आए हैं, प्रारब्ध का भोगते हैं, सब फिर नया कर्म ये बनाते हैं। तो मेरे को डर होता है कि नया कर्म मेरे को बिलकुल नहीं बनाने का है। किससे न लेन देन, न शब्द का उनसे बोलना, कुछ भी नहीं। हमारे से कई लोग करते थे कुछ भी, पर हम उनको वापसी में कुछ नहीं बोलते थे। हम बोलते थे ये भी ठीक है, मंत्र था ठीक है।

प्रेमी : भगवान्, आपने अभी बताया कि जिस दिन आपने ज्ञान सुना तो जगत की प्रलय हो गयी, जैसे कोई रहा ही नहीं, पर हमारे को चक्कर काटते-२ Time लगता है, हम ऐसे नहीं बोल सकते हैं कि कोई है ही नहीं हमारा।

भगवान् : देखो न तुम्हारे लिये चक्कर है न। मेरा तो चक्कर ही नहीं था न, जगत में व्यवहार किया नहीं, नहीं तो हम क्या बोले? वो ही लोगों ने जभी मेरे को पूरा जाना तो भगवान् समझा आपे ही-हमने नहीं बोला। फिर भी अभी हम मिलते नहीं है, अपनेवालों से। वो बोलते हैं कि हम दर्शन करने आयें, हम बोलते हैं नहीं करना। तुम जाकर अपना दर्शन करो। जिधर इतना दिन नहीं आए तो अभी भी तुम ऐसा करो। मतलब है कि अभी व्यवहार कैसे रखें? हमको किसा डर नहीं था, हम किसका खाते नहीं थे, देखते थे कि हम सहज में ही चलते हैं तो फिर लड़कियों से पूछते थे कि भगवान् को कुछ लगा? तो ये बोलते थे कुछ नहीं हुआ-उपर सत्संग ही चला।

प्रेमी : भगवान् पैगम्बर की तपस्या सुनते हैं तो लगता है वो स्वंयं भगवान् है, तो तपस्या कौनसी?

भगवान् : पैगम्बर कोई आसमान से नहीं फेंका गया, स्वंयंभव ही उसकी नेष्ठा है। स्वंयंभव शरीर नहीं है। नेष्ठा है कि भक्तो के उद्धार के लिये प्रघट

हुआ है, पर यह जो शरीर है उसका कहाँ तो जन्म हुआ। अभी हम माँ बाप के सिवाय आसमान से थोड़ी आए हैं। तुम बोलते हैं न कृष्ण देवकी का बेटा था। जन्म से थोड़ी भंगवान थे पर जन्म से संस्कार अच्छे होते हैं। Born Great बोलते हैं, क्यों कि संस्कार अच्छे थे।

प्रेमी : भगवान, बताते हैं कृष्ण की माँ ने तीन लोक उसके मुख में देखा।

भगवान : यह सब लीला है, बढ़ा चढ़ा कर लिखते हैं, सच थोड़ी है।

प्रेमी : मतलब पैगम्बर की तपस्या होती है।

भगवान : तपस्या तो होती है न। मन की, वचन की, वाणी की, खाने पीने की, सोने की, सब किस्म की तपस्या होती है। जभी चढ़ जाता है फिर बोलता है अभी कुछ हुआ ही नहीं है। अभी जितनी हमारी तपस्या आई वो कहाँ से आई?

प्रेमी : पुरुषार्थ से।

भगवान : तो दुखो न पुरुषार्थ है, जादू थोड़ी है जो लकड़ी फिराई। कर्माई किया न, गुरु वचन पालन किया न।

प्रेमी : आप के आकर्षण से आए भगवान।

भगवान : देखो ये आकर्षण भी तो तपस्या से आया, वैरागी मनुष्य में आकर्षण है जो किसी को खेंच सके। लाइट है न जो खेंचती है, बिजली Main Power से आती है।

प्रेमी : भगवान, ब्रह्म ज्ञान से पहले, आपकी मन इंद्रियों आप के वश में थी?

भगवान : Natural, जब जन्म लेते हैं वो थोड़ा बहुत तो रहता है न। संस्कार अच्छे रहते हैं, किसी को भी मन, वचन कर्म से दुखी नहीं करते हैं, पाप नहीं करते हैं, फिर पर उंचा चढ़ने के लिए तपस्या तो ही है।

प्रेमी : आपने वो भी लीला की हमको दिखाने के लिए।

भगवान : अभी तुम नानक, Christ को देखेंगे, बोलेंगे हम ऐसे नहीं हो सकते हैं ना उम्मीद होते हैं, पर हमको देखके उम्मीद करते हैं, क्यों नहीं मैं इच्छा छोड़ सकता हूं, अहंकार छोड़ सकता हूं, क्यों नहीं सबको प्यार कर सकता हूं? तो गुरु तुम्हें दिखाता है कि Impossible को भी Possible कर सकते हैं।

प्रेमी : संस्कार हुआ मतलब जीव आत्मा है।

भगवान् : उंचा था न संस्कार। किसी जीव में इतने उंचे संस्कार हैं, मेरे को नहीं लगता है कि किसी को गलत शब्द ना बोलें। मैं माया को इकट्ठी नहीं करता हूं, कोई है जिसने Life में एक भी गलत शब्द नहीं बोला होवे।

प्रेनी : जब-रगलत शब्द बोलते हैं तो पैगम्बर नहीं बन सकते हैं।

भगवान् : ऐसा नहीं तो बन सकते हैं? पर इतनी Double मेहनत पुरुषार्थ करता है, तुम हिसाब करो, एक शब्द भी मेरा गलत निकलता है तो क्यों? एक गृहस्थी का पैसा कोई खां गया बोला यह कब देगा? हमने बोला उससे लेकर दूं, किसे खिलाएगा। बच्चे स्त्री को, वो तो तुम जो सारा दिन पैसा-२ करते हैं तो वो किसके लिए। सबको पैसे की हाय-२ है। जो खाली बच्चों को खिलाया तो जानवर हुआ! मुझे तुम्हारी इस बात पर दुख होता है।

ओम

प्रेमी : अपने आप को प्यार करने का मतलब क्या है?

भगवान् : अभी मैं सारी दुनिया से तृप्त हूं, तू तृप्त नहीं है, कोई भी तृप्त नहीं है। कोई भी तृप्त नहीं है Full कि मेरे को इस के बाद कुछ भी नहीं चाहिए। वो कौन करता है जब्ती प्यार किया है अपने को Full किया है तभी, बाकी हम को चाहिए नहीं। समझो हम दुनिया के झंझटों में नहीं गये, तो अपने को प्यार किया ना। कर्म नहीं बनाया ये नहीं किया।

प्रेमी : आप की बाणी में था जो अपने आप को प्यार करेगा उस को किथर भी जाने की ज़रूरत नहीं है, Time Pass करने के लिए।

भगवान् : वो तो अलग बात है ना, पर जो प्यार करता है कि I am full. तू अभी मेरे को कुछ नहीं देखेगा कि भगवान् को ये ज़रूरत है। कुछ भी तुम बोलेगे भगवान् के लिए कौन सी Present लेकर जाऊँ? हम क्या करेंगे? Full है ना तो किस में आँख ही नहीं जाती है। तू सारी दुनिया मेरे आगे रख, पर मेरे को अच्छा नहीं लगता है, जैसे पेट भरा पड़ा है।

प्रेमी : आज आप ने Clear किया कि अपने आप को प्यार करें।

भगवान् : जेकर हम सब से Fit नहीं है तो तुम को इन से धोखा मिलता है, तो तुम ने अपने को प्यार किथर किया। समझो हम को धोखा भी मिले तो भी मैं खुश हूं। पर तुम को धोखा मिलता है तो तुम दुखी होता है, तो तुम ने अपने को प्यार किथर किया जो नाराज़ होगा। भगवान् बोलता है: हे अर्जुन, अशोक रहो, शोक ना कर।

प्रेमी : बाणी में आया कि हृदय का प्यार हम अपने से नहीं करते हैं, इसको खोलिए ?

भगवान् : अपने आप को प्यार करना माना Time पर हमारी क्रिया होनी चाहिए, ऐसा नहीं कि मेरे को ये भूला, ऐसे भूल नहीं होती है। तुम चाबी इधर रखेंगे तो ढूँढेंगे उधर, तो क्या? हृदय में तुम को आवाज़ आएगा कि इधर रखी है उठाओ, सब कुछ सहज हो जाएगा। जे हृदय से प्यार है सब से। तुम को कोई भी कुछ बोलेगा तो तुम बोलेंगे ये मेरे को ताना मारता है, पर ताना है ताम, खाने पाने की चीज़ है, रोज कुछ तो खाने को मिलेगा ना दुनिया से। "ताना लोकन का ताम धी भायां"। हम को तो मज़ा आता है जब

कोई मेरे लिए कुछ भी बोले, और भी बोले पर हमारा नाम तो मिटे ना। ये नाम इतना गंदा हो जाए जो बदबू ही आये तो काँई इस को देखे भी नहीं पर भगवान का नाम इतना सुगंधी वाला हो जाये जो सब आके अच्छी तरह से सुगंध ले, तो भगवान में सुगंध है। इस झूठे नाम में तो दुर्गंध है तो तुम दुर्गंध को प्यार करता है, ये तो गटर का मल-भूत्र शरीर का नाम प्रगट हुआ।

ओम

'मरने मिटने पर'

आजादी है गन के राग द्वेष से, इसमें त्याग बहुत करना पड़ता है।

उसमें Natural निईच्छा है। अपनी हस्ती गंवानी है कि एक-२ के आगे झुक सकें, मर सकें। मैं न चाहूं यह मेरे आगे मिटे। अपने को मार-मार कर मिट्टी करना है। इसीलिए भगवान ने साकार रूप धारण किया है जैसे सबके आगे शरीर झुके, ऐसे तो शरीर पापी नीच योनी है।

◦ हमेशा हारने का है। जीतने की इच्छा नहीं रखनी। वो ही जीतेगा जो सबके आगे झुक गया। तू झुकेगा तो अगले का विवेक जागेगा। Order न सीखें, आदर्श सीखें। कभी ये शब्द न बोलो-अभी कितना मरेंगे, कितना मिटेंगे, मैं ही झुकूँ क्या? मैं निकली अर्थात मौत आया, पीछे जन्म मरण आया।

◦ जहाँ मैं निकले वहाँ दस ही नाखुनों का ज़ोर लगाके अपने को हटाओ।

◦ किसी के आधार पर माया छोड़ेंगे तो घरवालों को वासना की बांस आएगी कि यह दूसरे का आधार लेके मेरे को छोड़ रहा है। तो तुम्हारे Life में राग-द्वेष कभी ना छूटेगा। थोड़ा भी Life में द्वेष बचा तो कुत्ते का जन्म मिलेगा।

◦ जीतेजी मर जाओ। जीव तो फथकेगा मरने के टाईम तो आज ही क्यों न फथके। वो मरने का दिन तो आनेवाला है, फिर जन्म-२ नहीं फथकेगा। कितने जीव-जंतू जानकर देखो कैसे फथक-२ के मरते हैं। तो आज ही अहंकार का पर्दा उठाओ और मर जाओ।

◦ मनुष्य जन्म परीक्षा का साधन है, उसमें अगर पास नहीं हुए तो मूर्ख के मूर्ख है, इस मनुष्य जन्म का कदर नहीं किया तो।

◦ तू मर तो जगत है ही नहीं। मैं नहीं हूं, भगवान है; जगत की बात छोड़ दो।

◦ प्रकृति है वो तो सेवा करती है। हर चीज़ काम में आती है, Useful है। यह शरीर ही है जो काम में नहीं आता। उसकी Ego छोड़ दो। यह Artificial खुशी है, खत्म होगी गुरु की मार खाने से। गुरु मार देता है तो बाकी लोग भी तुम्हारी इज्जत नहीं करते हैं तो तू Ego गंवाकर, निराकार से मिलकर एक हो जाता है। है ही वो। देह नहीं रही। फिर सब से Fit हो जाते हैं। जब फूल पूरा खत्म हो जाता है, तो उसका Essence रह जाता है।

Contd'.2.

○ सुरमा कूट-२ के, तब आँख में पड़ता है, तो तुम्हें भी इतनी हस्ती गंवानी है, जो तू मरे मिटे, केवल भगवान ही रह जाए। फिर मरे हुए को कौन मारेगा। जीव भाव का पूरा दीज ही गल जाए। मुझे मरा हुआ आदमी पसंद है, जिसका शब्द मिटा हुआ होवे। जिसका शरीर जले तो पता भी न पड़े, शांती ही शांती। अहंकारी है तो मेरा उठना बैठना भी दूसरे की दिल को धड़कन देगा।

○ हृदय में ग्रभू प्रेम, करूणा, दर्द का खड़ा बनाओ, जिसमें भगवान का प्रेम अंदर टिके, जैसे बरसात का पानी किसी खड़े में टिकता है।

○ लड़ना है अपने मन से, इच्छा से, अहंकार से, मन जो बाहर दौड़ता है। हम अपने में ऐसे बैठे जो मन कुछ कर ही ना सके। मरे हुए को कौन मारेगा? हमारे अन्दर Sense ही ना होवे जो औरो को रस ही ना आवे मेरे से। तुम बोलते हैं घुटन में कब तक? चुप भी कितना रहूँ? कितना मरूँ? जिज्ञासू है तो क्या Count करेगा? तू Accountant थोड़ी है। जो बोलता है इसके आगे कितना मरूँ- मरा कौन? जो मुर्दा है तो उसको क्या भासेगा? तू तो मरा ही नहीं है। गुरु का है विचार, तुम्हारा है ख्याल। विचार से मगज खुलता है। अपनी चमाट अपने को नहीं लगती, गुरु ऐसी चमाट लगायेगा जो याद रहेगी। सारी Life की Reel मरने के समय सामने आयेगी, तो क्यों ना गुरु के चरणों में मरूँ, जो सारी दुनिया सपना लगे। सपने को सपना समझके झूठ को Dissolve करो। गुरु की वाणी की मदद से निर्णय करो, कचरा निकालो। विचार का वचन अन्दर काम करता है। नया जीवन होगा, आनंद आयेगा, यहीं मुक्ति है।

○ हर एक सुख लेना चाहता है, पर मिट्ठा कौन है? कुछ भी बनने की आदत है, इच्छा है, पर मिटने की आदत नहीं है जो शल मेरा नाम मिट जाए, गुम हो जाए। पुराने नाम से मुझे कोई न पहचाने। तुम अभी सूक्ष्म में जीते हो। जीते हुए नहीं रहो, है जीते जी मरना।

ओम

'गुरु भक्ति'

प्रेमी : भगवान् गुरु भक्ति को खोलिये कि किसको कहते हैं?

भगवान् : दुनिया में एक भी भक्त सच्चा गुरुओं को नहीं है। इतना श्रद्धावाला नहीं है जो गुरु को देखकर उसका रूप हो जाए। अनन्य भक्ति एक-२ में आत्मा देखना और प्रेम करना। ये ही सच्ची अनन्य भक्ति है। रवाजी गुरु भक्ति सच्ची नहीं है, पर सत् के सिवाय रह न सको। एक-२ में राम रूप देखो तो प्यार करने में देरी नहीं लगेगी। औरत देखी, आदर्मी देखा, तो अनन्य भक्ति कैसे हुई? उस एक के सिवाय कोई है ही नहीं, ही ही अल्लाह। बसकर-२ है ही। इतने रूप धारण करके आया है। अभी कौन सी आँखों से दूसरा देखें? आँखों में ज्योति उसकी है, आँखों में से जो छिड़कियों है उनसे भी देखो कि कौन बैठके देख रहा है। शांत स्वरूप, ज्ञान स्वरूप कौन है? सूरदास को आँखें नहीं हैं, तो भी अनुभव करता है कि ये स्त्री की आवाज है, ये पुरुष की आवाज है। जो सर्व में सत्तगुरु देखता है, उसने भक्ति किया। हम अपने से पूछें, हम सर्व में आत्मा देखते हैं? तुम बोलते हैं हम गीता पढ़ते हैं, तो किसको कम ज़ास्ती कैसे देखते हैं? तुम्हारे से ये काम क्यों नहीं होता है? ये गुरु भक्ति क्यों नहीं होती है, जो सर्व में साई देखो।

प्रेमी : सत्तगुरु में आत्मा देखने में आती है, पर वो भाव सबके लिये नहीं रहता।

भगवान् : वो तो हम हुए लोभी कि जिससे मिला उसे Return किया, जिससे हमको मिला उंधर भगवान् देखा पर जिनसे नहीं मिलता है। उससे क्या करते हैं? जिधर Opposition मिलता है, Opposition में प्यार करना ही उन्नति है। Opposition में प्यार करना ही गुरु भक्ति है। जिनसे मिलता है, उनसे प्यार करते हैं, जिनसे नहीं मिलता है उनको आप दियो ना। एक जगह से लेकर सर्व में जाके बॉटो। प्रसाद नाम उसका है, जो बॉट के खाए। जैसे गुरु पूर्णिमा के दिन प्रसाद खाते हैं, ऐसे ही गुरु का ज्ञान प्रसाद है, वो लेके सर्व में बॉटे। वो कैसे बॉटे, कि आगेवाले को खातिरी होवे कि ये सब सत्तगुरु देखते हैं। गुरु जभी हमको देते हैं तो हम उसको प्यार करते हैं, पर जभी कोई गाली देता है तो उसमें कैसे भगवान् देखें? उन्नति किसमें है?

Contd. 2.

प्रेमी : हम कहते हैं इसका तो ऐसा Nature है, ये सनझेगा ही नहीं।

भगवान् : देर है भगवान के घर में, अंधेर नहीं है। वाक्षी हमारी वृत्ति पद्धये में भी जाती है, जगत में भी जाती है, इस उस में भी जाती है, तो हम भूल जाते हैं, क्यों कि यहाँ वहाँ मन है, तो वो विष्टा लेकर आएगा। मन जीता है तो वो लंकर भी आएगा। फिर भी मनुष्य इस मन को सत्ता देता है कि I am right. सत्ता क्यों देते हैं? मन का आवाज सन्नेंगे, गरु का आवाज सुनने में बहरे हैं, कि वहाँ गुरु क्या बोले? Second-Second में गुरु-२ करेंगे तभी बनेंगे। ये पाप है जो गुरु-२ नहीं करके, मैं-२ कर्त्ता। पीछे भूल होती ही रहेंगी। तुम पता नहीं कैसे चलाते हैं? एक मिन्ट भी गुरु भूला तो ये शरीर याद आयेगा। एक रहेगा, हम हैं तो तुम नहीं, तुम हैं तो हम नहीं। उसको ही Observe करना है। मेरे को ये अन्दर में आता है कि स्वार्थ गुरु से पूरा हुआ तो प्यार करते हैं पर इससे गालियाँ मिले तो प्यार करे ना।

प्रेमी : भगवान्, गुरु भक्ति क्या है?

भगवान् : गुरु की भक्ति है गुरु के वचन हृदय में रखना। चरण गुरु के धोय-२ पी...। यह भक्ति नहीं है कि गुरु के चरण धोके पौना। तो कौन सी भक्ति है। आज हमने गुरु के वचन हृदय में रखे हैं तो सब को कितना फायदा पड़ता है। आज लोग मेरे वचन लेके अपने को धोते जाते हैं, और Change feel करते हैं। गुरु के चरण माना वचन। वचन को हृदय में बसाए, न कि चरण। गुरु है वाणी, वाणी है गुरु। गुरु को देखकर खुशी होवे कि ये कैसे सत्संग करते हैं, मेरे योगी कहाँ में जाए, तो सब भक्तों को बिठाकर, ओम कहें, गीता पढ़े।

मेरे मुख से भी वो ही वचन निकले, जो भगवान की महिमा निकले। जैसे भगवान ने मेरे को तारा, ऐसे मैं भी भगवान की महिमा करते-२ सब को तारते आयें। गुरु जभी सब में देखके तुम प्यार करेंगे न, तो गुरु भक्ति किया। गुरु ऐसा छोटा नहीं है ५ फीट का जो तू मुझको देखेगा जभी तू सब में मेरे को देखेगा, तभी समझो तुमने मेरे को प्यार किया, भक्ति किया। Time पर किसको ज़रूरत है तो तुमने प्यार किया, ये है अनन्य भाव एक-२ में परमात्मा देखना और सबको प्यार करना। गुरु के वचन पर

मरके मिटे। गुरु भक्ति ये नहीं कि गुरु के पांव धोना। सच्ची भक्ति ये है कि मैं उसका रूप हो जाऊँ, और उनकी वाणी अन्दर में अनुभव करूँ कि ये कहाँ तक वाणी है, कहाँ तक रहणी है, कहाँ तक सहनी है। उनका अनुभव करे जो बोलते हैं ना कि गुरु भक्ति क्या करें? जैसे मीरा ने भक्ति किया, पहले तो बाहर देखा, आखिर जभी उसको गुरु मिला, पीछे बोला कि मैं ने अविनाशी वर पाया। पहले समझा कृष्ण मेरा भगवान है, फिर बोला अविनाशी मेरा भगवान है। जाग्रता आ गई ना उसको।

ओम

ओम सत्तगुरु प्रसाद

'जान छूटी लाखों पाए'

वो दिन याद करो और आज का दिन याद करो, कितना फर्क है तुम्हारे में? तो वो फर्क कहाँ से आया? पहले दुनिया के नशे में थे, कि ये नसीब में है, माया लेना, पर्दाथ लेना। सब ठीक है, पर जैसे आँख खुलती है, सपने से जागता है, तो बोलते हैं कि इसमें मेरे काम का क्या है? मेरे को कौनसी शांति मिलेगी? तुम समझते हैं इसमें शांति मिलेगी? ये ज़रूर देखना है कि एक आना मेरा भाई मेरे पर खर्च करेगा तो बोलेगा मैंने इतना खर्च किया इसके उपर। इतना मेरा इस बात पर विश्वास है कि घरबाले एक आना देकर बोलेंगे कि दस आना हुआ। कोई माफ नहीं करेगा कि मैंने नहीं किया। तभी तो ये संसार में सब एक दूसरे के गुलाम बने हैं। क्यों बने हैं? क्यों कि कोई भी देकर भूलता नहीं है। तुम बेटी को दहेज देंगे तो भी नहीं भूलते हैं। बाकी भाई तुमको देगा तो भूलेगा नहीं? माना तुम पाण लेते हैं ना। हम बोलते हैं लो उससे जो बिलकुल भूल जाए, कि मैंने कुछ दिया भी है, उसको लगे कि इसका था, इसको मिला। ऐसा कौन है? ऐसा कौन देता है? तुमने कभी Promise कराया है उसको कि मेरा हक है जो मेरे को देता है, या अपनी मजदूरी हमको देता है?

एक तो प्रारब्ध होती है, वो ठीक है, पर प्रारब्ध को भी काटने वाला ये ज्ञान है। तुम बोलते हैं सहज मिला सो दूध बराबर, हम बोलते हैं दिने दुखोया, अण्डिन्हे राजी रहिया, दिया तो दुख हुआ, नहीं देते थे तो हम राजी हैं। समझो तुम अभी सोने की मोहर रखते हैं, तो मैं क्या खुश होंगे? क्या करेंगे हम? कौनसा जेवर पहनेंगे? कौन सा घर बनायेंगे? जिस को घर रखना है वो बना रहे हैं, जिसको बनाना है वो बना रहे हैं 'मेरा की'। इधर तो सब Ready-made होता है। मेरा तो कोई मतलब ही नहीं होता इन बातों से ये खाली याद रखो कि जान छूटी तो लाखें पाए। जो समझो कोई हमको पैसे से बांधे तो हम बंधन में नहीं आएंगे? हम बोलेंगे-ठीक है। तुमने बोला, हमने लिया-अभी ये तुम्हारा है। वो होशियार है जो बोले, इससे मेरा क्या होगा? पर जो अज्ञानी है उसको दिलका दिलासा है माया का, भगवान नहीं देखो तुमको माया आये तुम Refuse करो, देखो तुमको हिम्मत है Refuse करने की? हमारे पास कोई लेकर भी नहीं आएगा। बोलेगा भी नहीं, खाली बोलेंगे कि कोई सेवा होवे तो बताना। हम बोलेंगे, जभी होगी तभी बतायेंगे। अगर हम Cut Cut Cut Cut Cut करेंगे, तभी निज स्वरूप में आयेंगे।

ओम

'प्रवृत्ति-निवृत्ति'

प्रेमी : भगवान्, प्रवृत्ति में निवृत्त कैसे होवें?

भगवान् : पूरन् ज्ञानी प्रवृत्त होते हुए भी उसमें शंका नहीं रखना कि, ये प्रवृत्त क्यों होता है? तुम्हारी प्रवृत्ति सच है, ज्ञानी की प्रवृत्ति मिथ्या है। तुम लड़ू नहीं खाओ कि मैं प्रवृत्त होके न्यारा कैसे रहूँ। तू अज्ञान में बैठा है तो न्यारा कैसे रहेगा? जो ज्ञान में है वो न्यारा है। जब्ती इतनी स्थिति अपनी बनाके रखे तभी प्रवृत्ति का असर नहीं होता है। जब्ती माया सत् मानते हैं, सोना मिट्टी सत् लगता है, जगत् सत् लगता है, लोक वासना भी है, देह वासना भी है, तब उसकी प्रवृत्ति निवृत्ति कैसे होगी? आपे ही अपने को शाबास देते हैं। अभी प्रवृत्त हूँ, निवृत्ति कैसे होउँ? वो तो ज्ञानी के लिये बोलते हैं-शंका नहीं रखो इतनी प्रवृत्ति में वो कैसे Be Still, शांत, मौन, गम्भीर है। जैसे इसके अन्दर जगत् जगत् ही नहीं है। जगत् अन्दर नहीं है, तभी Be Still है।

प्रेमी : भगवान्, आप की वाणी से अन्दर हिल गया, अब आप को निवृत्त करना पड़ेगा।

भगवान् : निवृत्त मेरा ख्याल होगा, निवृत्त मेरी Body थोड़ी होगी। Body मेरी कहाँ भी है मैं निवृत्त हूँ। चाहे यहाँ है या वहाँ भी है। एक लड़की ने मेरे को दिल्ली में कहा जैसे आप दिल्ली में बैठे हैं, कोई ज्ञानी नहीं, कर्म नहीं, बात नहीं, शब्द नहीं, ऐसे Bombay हम देखेगा वो आई मेरे को उसने शरणागति में देखा, कौन सी मेरी बात है, कर्म है, क्रिया है, लेन देन है, तुम Inquiry करो, वो चुप हो गई। बोली मैं Fail हो गई।

सत् पुरुष अपने में ही गुम रहते हैं तो हालतें ऐसे ही बीत जाती हैं, जैसे सपने की बात हुई। सपने में भी कई बातें आती हैं तो जागने के बाद सब खलास हो जाती है। ऐसे आत्म जागृति में सब कुछ मिथ्या है। इसलिए आत्मा का ज्ञान सब की निवृत्ति कराता है। पीछे प्रवृत्ति तो रहती नहीं। जो तुमको व्यंवहार लगता है उसमें तुम भी सच्चे नहीं, जो सौदा करे सच का। सच क्या है? सच बात करना सच नहीं है, पर अपना देह अध्यास छोड़ना ही सच है। अपना अहंकार छोड़ना, किधर भी बनना नहीं, ये सच है।

प्रेमी : भगवान्, आप की Point है प्रवृत्ति तुम्हारी कृपा है, निवृत्ति गुरु की कृपा से होती है।

Contd.. 2.

भगवान् : प्रवृत्ति अपने घर में है। हर चीज़ में तुम प्रवृत्त होते हो, कर्म करते हो, तो उसमें ही गुप्त हो जाते हो। अभी निवृत्ति चाहिये जो घर में रहते हुए भी न्यारे होके रहें। जैसे भजन बोलते हैं "बाहँ से पकड़के मेरे को तारेंगे..."।" वो कौन निकाल सकता है? वो खुद निकलके बैठा हो। दुनिया में जो खुद ही दल दल में है, वो कैसे निकालेगा? दुनिया में कोई गुरु माया रहित नहीं है। उनके पास कुछ भी लेके जाओ, उनके शिष्य ऐसे लेते हैं जैसे मूर्ख होय, इधर सब Full Spunge, नाक तक तृप्त है। किसी को किसी से कुछ चाहिये ही नहीं, ये नहीं कि सहज मिला सो दूध बराबर। पर मिले कुछ भी तो कष्ट होवे। तुम्हारी (जिज्ञासु) की हालत ऐसी होवे कि क्या करूँ तेरी वैकुंठ को जित साथ संगत नहीं होये। वो वैकुंठ स्वर्ग नहीं है, जिसको तुम स्वर्ग समझते हो, पर जहाँ परमात्मा का राज्य है, वो ही स्वर्ग है, जहाँ दुनिया का सुख है वो नर्क है।

ममता का मैल तुमने रखा है तो समता कैसे आयेगी? मेरा मेरा करके ऐसे ही मर जायेंगे, तुम समान दृष्टि में नहीं आते हैं तो औरों की भलाई कैसे करेंगे? जो तुम मेरे मेरे में पड़े है, जिनको तुम अपनी जान करके देखते हैं, तो तुम समता में आ ही नहीं सकते। मैं कोई एक भी अपना रखेंगे, ये मेरी बहन है, ये मेरी बेटी है, ये मेरा शिष्य है, तो मेरा Love बन्धन हो जाएगा। तो ममता में समता नहीं आएगी। छूट जाएगी। गुरु जी मेरी ममता काटो। इधर कोई योगी संकल्प करता है कि मेरा सब कुछ भगवान का हो जाए तो वो निष्काम में ही जाता है। तो देखो अच्छी भावना से ममता Cut जो गई। अभी देखो ये प्रवृत्ति से निवृत्ति में आ गये। इस जैसा सन्यासी कोई नहीं है, जो जीते जी इसने मौत खरीद किया। प्रवृत्ति में निवृत्ति इसको बोलते हैं, तो गुरु ने निवृत्ति किया न। जो अभी आराम में बैठा है। तो कोई-२ संकल्प करता है कि मेरा सब कुछ सत्संग के हवाले हो जाए। जो सब का हो गया वो भगवान का हो गया। जो भगवान का हुआ वो सब का Family Member है। जात हमारी आत्मा.....।

प्रेमी : भगवान् ये बात समझ में आई कि ज्ञानी कैसे प्रवृत्ति में निवृत्ति रहता है।

भगवान् : ज्ञानी याहे Action करे या न करे सो स्वार्थ के बिगेर है, उसकी प्रवृत्ति निवृत्ति अलग नहीं है, तुमको भसता है मैं प्रवृत्ति में हूँ तो निवृत्ति कब होंगे? उसमें छुटकारे की तो बात ही नहीं है।

ये भी नहीं कहेंगे मेरे को तेरे से कब छुटकारा मिलेगा? पर मैं तो पहले से ही छूटा पड़ा हूं। मेरे लिये प्रवृत्ति निवृत्ति है ही नहीं, आत्मा ही आत्मा है, तो छुटकारा है। सारा दिन सेवा मे सब हालत भी चली जाती है।

प्रेमी : प्रवृत्ति से निवृत्ति में कैसे आएं?

भगवान : प्रवृत्ति जो है वो है संसार, उसमें से निवृत्ति से निकले हैं। नहीं तो घर गृहस्थी में फंस जाए, फिर सब छोड़ देंगे जो तुमको पसंद होते, प्रवृत्ति से वैराग लिया।

प्रेमी : हम निवृत्ति के लिये क्या करें?

भगवान : निवृत्ति हो जाती है, जबी ज्ञान अन्दर आता है तो Automatically कर्म छूट जाते हैं। करेंगे तो भी अहंकार आएगा।, छोड़ेंगे तो भी अहंकार आएगा तुम बोलेंगे शादी में नहीं गई उधर नहीं पहुंची ये कौन बोलता है? हमारा ज्ञान Normal Natural है, सहज है, राज योग है।

प्रेमी : प्रवृत्ति में निवृत्ति को समझाइये।

भगवान : हम प्रवृत्ति होते हुए भी निवृत्ति का अनुभव करते हैं। प्रवृत्ति होते हुए निवृत्ति में है। समझो जन्म लीया गृहस्थ में प्रारब्ध लेके आए अभी भागा तो किस लिये भागा? जागा क्यों नहीं? अभी समझो एक अज्ञान से न उतरे हो, तो दूसरे का अज्ञान कैसे जाने? माया से न गुजरे हो, समझो born grate हैं, संस्कार अच्छे हैं तो भी माया से गुजरना पड़ता है सब को। जब पूरा ज्ञान अन्दर जाएगा, पूरा दर्द गुरु के लिये होगा तब दूसरे की भी भलाई होगी। जभी दर्द लगे तभी निवृत्ति होगी। वो ही है भगवान जो पराया दर्द जाने, सच्ची तरह से, जैसे मेरा सिकीलधा बैटा है तो कितनी लगन से प्यार करेंगे? सेवा करेंगे?

प्रेमी : भगवान प्रवृत्ति में निवृत्ति को और खोलिये?

भगवान : तू प्रम स्वरूप हो जा। ये नहीं बोलो कि ये माया है ये भगवान है, ये ठिककर है, ये पत्थर है। ठिककर पत्थर छोड़ो। तुम बस प्रेम का रूप हो जाओ। जो सामने आए तुम प्रेम करो, Enjoy करो। कोई भी Scenery आए Enjoy करो। बाकी कुछ है ही नहीं। संसार तो है धुएं का पहाड़, धुएं के पहाड़ को कैसे पेकड़ेंगे। पकड़ेंगे या नहीं पकड़ेंगे, है तो धुएं का पहाड़। उसको क्या पकड़ेंगे और क्या छोड़ेंगे? ऐसे देखो संसार माना धुएं का पहाड़।

ओम सत्गुरुं प्रसादं

'मूर्ति कैसे बने'

[34]

माली कितनी Garden की Cutting करता है, तो Garden की सुंदरता बढ़ती है। तुमने किसको बोला है मेरी Cutting कर। तुम्हारी थोड़ी भी भूल होवे, थोड़ा भी अज्ञान बढ़े, तो तुम एकदम आके सच बताओ। जैसे-२ भगवान Cutting करेगा, तो तुम्हारी सुंदरता निकलेगी। इस से दुनिया में सब कहेंगे, कौन से गुरु के पास जाते हो जो ये इतना सत्य सरलता में हो, इससे हमको सर्वसे प्रेम, सेवा मिलेगी, कभी धोखा नहीं मिलेगा। अज्ञानी कोई उल्टा भी बोले, पर तम्हें सीधा जवाब देना है, जैसे वो भूल ना करे। अगर वो भूल करता है, तो तुम्हारे ऊपर दोष है। दूसरे को हम कर्म करने (बनाने) ना दे, ना कर्म देखें। इतना हम गुम हो जाएं। अन्दर बाहर तुम्हारी शुद्धता होवे तो तुम्हारा चेहरा मूर्ति की तरह चमकेगा।

मैं जो चाहूं, वैसा ना होवे, तो ये है Cutting इस शरीर की, शरीर रूपी Garden की।

- (1) मैं चाहता हूं मेरे से कोई मुस्कराए तो सही, पर ज़रूरी है क्या वो तुझे देखकर मुस्कराए।
- (2) मैं चाहता हूं मेरी कोई चादर सीधी करके डाले, पर वो भले उल्टी करे।
- (3) मैं चाहता हूं मेरी कोई सेवा करे, पर भले वो आराम करे।
- (4) मैं चाहता हूं कोई मुझे प्यार करे, पर वो भले मुझे देखे भी नहीं।
- (5) मैं चाहता हूं कोई मेरे को घुमाने लेके जाए, पर वो भले बिना बताए कहीं भी घूमने चला जाए पर मेरे चहरे पर गुंज न हो।
- (6) मैं चाहता हूं कोई मेरे लिए शुद्ध और अच्छा संकल्प करे, पर भले वो विकल्प करे।
- (7) मैं चाहता हूं कोई मेरे से अच्छा चले, पर भले वो मेरे से बुरा चले।
- (8) मैं चाहता हूं कोई भी मेरी बेइज्जती ना करे, पर वो लाख बार बेइज्जती करे।
- (9) मैं चाहता हूं मुझे सुख मिले पर भले वह मुझे सुख न दे, दुख ही दुख दे।
- (10) मैं चाहता हूं, मैं Strong बनकर रहूं, पर भले मुझे सब Weak बनाए।
- (11) मैं चाहता हूं चीज़ ठीक बने पर भले कुछ भी ठीक ना बने।
- (12) मैं चाहता हूं सेवाधारी जल्दी आए, पर भले वो देर से आए।

Contd. 2.

- (13) मैं चाहता हूं कोई मुझे प्यार से समझाए, पर वो भले मुझसे तीखा बोले।
- (14) मैं चाहता हूं घर साफ सुंदर रहे, पर भले वो टेढ़ा मेढ़ा करके घर को बिगाड़ दे।
- (15) मैं चाहता हूं यह जल्दी सोये, पर वह भले देर से सोये।
- (16) मैं चाहता हूं बच्चे पढ़ाई करें, पर वो भले मौज मस्ती करे।
- (17) मैं चाहता हूं वो खर्चा कम करे, पर भले वो ज्यादा खर्च करे।
- (18) मैं चाहता हूं मेरे को सब Value दे; पर भले वो Value ना दे।

तभी मूर्ति बनेंगे जब इतनी सारी Cutting होगी।

ओम

'अनन्य भक्ति'

प्रेमी : अनन्य भक्ति कैसे बढ़े जो दुनिया से बिलकुल Detach हो जाएं?

भगवान् : एक-२ में परमात्मा देखो तो भक्ति हो जाएगी। गीता में बोलता है कि हे अर्जुन तुमको अनन्य भक्ति करना चाहिए, अनन्य माना एक-२ में परमात्मा देखके उसको प्यार करो, सेवा करो। एक-२ में राग-द्वेष पहले खत्म करो। राग-द्वेष होता है ना कि ये अच्छा है, ये बुरा है। राग-द्वेष पहले मेरे मन में है नहीं, तभी हमारे में अनन्य भक्ति होगी, पर जे मेरे मन में राग द्वेष है कि ये छोटा है, ये बड़ा है, ये अच्छा है, ये बुरा है फिर भक्ति नहीं होगी। मेरे से राग-द्वेष नहीं होवे और समता भाव होवे, तभी हम प्यार कर सकते हैं। पहले ये काम करो, छोटी-२ मोह-ममता, इच्छा-वासना, अपने से दूर करो, अपने से वो निकालो। भोह-ममता, इच्छा-वासना, द्वेत-द्वेष ये छोड़ने का है। पहले सतसंग माना क्या? सतसंग माना अन्दर से खाली होना कि मेरे को किसके लिए राग-द्वेष नहीं है। मेरे को मोह-ममता नहीं है। सब मेरा ही रूप है। ऐसे कैसे अनन्य भक्ति होगी? तू भक्ति चाहता है। घाह भली, पर कैसे चाहता है? जभी तू खाली नहीं है तो कोई न कोई विग्न आकर पड़ेगा भक्ति में भी। तुम जो भक्ति करते हैं तो भक्ति नहीं करते हैं, तुम किसको आगे रखकर प्यार करते हैं। हम जो सामने आता है उसको प्यार करता है, तो सब भगवान का रूप है। हम Particular किसी कृष्ण की, नानिक की भक्ति नहीं करेंगे पर सर्वज्ञ घट-घट वासी परमात्मा है तो एक-२ में वो देखेंग तो प्यार हो जाएगा। आज समझा भक्ति इसको बोलते हैं। लोग जो भक्ति करते हैं, ठाकुर रखते हैं, आरती करते हैं, ये तो खिलौनों से संबंध किया, बच्चे जैसे खिलौना बनाते हैं, वो तुम खिलौनों के सामने बैठके उसका ध्यान किया, आरती किया, अरदास किया, सब किया पर जब्ती चलते-फिरते, अन्दर में, बाहर में, सब में वो साई दिखे तो जैसे मेरा किसी से भी Face ऐसा नहीं होवे, राग-द्वेष ना होवे। एक रस Face करो कि हम तृप्त हैं, शांत हैं, मौन है, पहले तो हमको तृप्ती होनी चाहिए, दुनिया की इच्छा वासना लगी पड़ी है तो आदमी भक्ति कैसे करेगा, तृप्ती होवे ना। Full sponge है कि भगवान से हम को सब कुछ मिला है पुष्पम्, पत्रम्, फलम्, तोयम्। शरीर है पत्र, फूल है मन वे उनके उपर चढ़ाने का है कि मन मेरा तेरा है, तेरा मन मेरा है। तू मैं हूं, मैं तू हूं।

Contd.2.

पुष्प-फूल ये नहीं कि हम मूर्ति पर जाकर डालें, पर शरीर पत्र है, पुष्प अहंकार है, मन है, पर जो भी कर्म हमारे से अच्छा बुरा होवे तो भगवान के निमित्त है। मैं नहीं करने वाला हूं, जो मेरे को फल की इच्छा होवे। करने वाला कराता है तो वो होता है। मैं थोड़ी कर्ता हूं, मैं करेगा तो मुश्किल हो जायेगी, कर्तापना निकल आएगा, उससे कर्म बनेगा, दुनिया में एक भी अज्ञानी नहीं है जो सारा दिन कर्म न बनाये, मन में कुत्ता बिल्ला मारता है। संकल्प विकल्प चलता है। Non-stop thought parade चलती है। तो वो किधर जायेगा ख्याल? ज़रूर कोई ना कोई कर्म बनायेगा। तुमको कभी डर होता है कि मैं कर्म ना बनाऊं, दूत ना करूं जो कर्म बनें। उहे करूं ही नां जो कर्म बने। कर्म की बड़ी Mystery है, सब कर्म में हे अर्जुन दोष है। अच्छा वो क्यों बोलता है कि सब कर्म में दोष है, निर्दोष फक्त आत्मा है। हम बोलते हैं तुमको करोड़ रूपये हैं, अभी तुम कौनसा सतकर्म करेंगे? है कोई सतकर्म?

ओम

'ATTACH - DETACH'

'समता योग'

पहले Attach है फिर Detach है फिर समता योग है, बीच में स्थिति आती है वैराग की, फिर वो देखते हैं कि ये तो Same है। हमारा प्यार कहाँ जाएगा, हमारी मुहोब्बत कहाँ जाएगी, ये तुम देखो। हमारा त्याग भी होवे, वैराग भी होवे, बात भी ना होवे, लेन देन भी ना करे, कुछ ना करें, पर सामने जो आता है, हम प्यार करते हैं, तो उसमें भी वो बन जाता है, अभी उनका दुख मिटेगा ना। जो बीच में अवस्था आयी वैराग की। जभी हम को Detach होने का था, Attach फिर Detach फिर समता योग। हम तुम को बताते हैं कि तुम अच्छी तरह से ज्ञान समझो कि Attach Detach समता योग, ऐसे ज़रूर होगा। Attach भी है पहले, मोह भी है सबसे, फिर Detach भी है ज्ञान से वैराग आ जाता है कि ये भी क्या-४। फिर आता है समता योग कि अभी मैं अपना पराया किसको देखूँ, ये मेरा अपना है, ये पराया है, ये अच्छा है, ये बुरा है, ये क्यूँ मैं देखूँ। समता का Part पीछे होता है, पहले Attach फिर Detach पीछे समता।

प्रेमी : समता आने पर शांति आती है, नहीं तो अपना पराया दिखता है।

भगवान : नहीं, पर मन में खोट होती है कि हम को उनसे नहीं बात करना है क्यों कि मौह की बात करेगा, ये इच्छा की बात करेगा, ये अहंकार की बात करेगा। हमको ही नहीं पसंद आता है। घरवालों के लिए खेंच होती है वो भी एक किसम का प्यार होता है कि इससे भी मैं नफरत करों करूँ, तो ये ज़रूरी है Attach - Detach समता। अपने अंदर थरमामीटर डालना है कि इतना Attach हुआ, फिर इतना Detach किया, फिर कितना समता योग में आ गया। पर No Action। सभी घरवालों से भी समता है, पर Action कोई नहीं है, सिवाय मुस्कराने के कुछ जानता नहीं है। ये नहीं है कि तुम फिर लेन देन करेंगे, आना जाना करेंगे, तू मां करेंगे, नहीं खाली शांती है बस।

प्रेमी : भगवान ये बात बहुत समझने की है कि समता योग में फिर कोई लेन देन नहीं, Action नहीं।

भगवान : सब का मगज जो है ना वो Down है तो हम इधर से ही उनका मगज ठीक करते हैं कि अभी तुम ऐसे चलना। अपनी छट्ठी कोई नहीं

जोंचता कि अपनी Life में मैंने पहले प्यार कितना किया? मोह कितना किया? विकार कौन सा किया? किसको कैसे ठगा? क्या-२ किया? अपनी छट्ठी जो है वो लिखना चाहिए और अभी मेरे को क्या फर्क हुआ है ज्ञान से, ज्ञान से कितना फर्क होता है ये अभी छट्ठी लिखो।

प्रेमी : जब्ती हम Detach होते हैं तो सामने वाले को Feel होता है तभी हमको भी अच्छा नहीं लगता है।

भगवान : ये तो सच्ची बात है क्यों कि मोह है। मैं बोलते हैं कि वो दुखी ना होवे, इसका मतलब Detach हुआ ही नहीं। झूठ में Detach हुई। फिर जब्ती सामने वाले की शक्ति देखो तो Detach हुई नहीं। खूद ही दुखी हो जाएँगे। सरल बात थोड़ी है कि Attach से Detach बने फिर समता में आयें, ये तो लगातार पुरुषार्थ है जो कोई उसमें आदमी गुम हो जाएगा। बाकी Attach होना तो सरल है, वो तो शहद है। Attach माना तुम्हको कोई बोले कि तुम मेरी सहेली बनो तो लेन देन करेंगे, आना जाना करेंगे, मनोरंजन करेंगे, परचितन करेंगे, वो खुश हो जाएँगे। Attach में यह सुख है। पर जब्ती Detach हम करते हैं उन से तो वो हमारे से नफरत करेंगे, गाली भी देंगे, अभी क्या समझती है अपने को, अभी ऐसा, अभी वैसा। Detach होने में तकलीफ है, Attach होने में तकलीफ नहीं है। अभी जाके सबसे Attach हो जाओ, सब खुश हो जायेंगे।

प्रेमी : भगवान वो Detach ही हैं, हम Attach हो जाते हैं।

भगवान : कुछ भी है, वो Detach है या नहीं है, वो भी तू बोलती है कि Detach है, क्यों कि तू समझती है कि मेरे जैसा मौह उसमें नहीं है, पर उसका मौह छुपेला है। तुम्हारा मौह बाहर से है तो तू समझती है कि इसको मोह नहीं है। हमको कितने ही सतकर्मों बोलते ले कि हमारा मोह नहीं है, पर यह सच्ची बात नहीं है। 'मेरा' है तो मोह है। 'मेरा' नहीं है तो मोह नहीं है, मेरेपन में ही दुख है कि किसको बोलूँ ना कि तू मेरा बेटा है तो उसको मोह हो जाता है। मैं नहीं मानूँ कि ये बोले मेरा मोह नहीं है, अन्दर की बात है। बाहर से कितने लोग पहले छोड़के आते थे, किसी ने घर छोड़ा, किसी ने बेटा छोड़ा, बाहर से छोड़ा, पर इधर से थोड़ी ममता गई। फिर अज्ञान वस होके फिर उनसे ही जाके मोह करते हैं। तो कभी ना कोई बोले कि मेरा कोह नहीं है, तो क्या है? घर में तो रहते हैं मेरा-२

बोलते हैं, या तो ऐसा रास्ता होवे जैसे मेरा पड़ोसी से नहीं है तो मेरे बेटे से भी नहीं है। किसी से भी नहीं है। उनका दुख थोड़ी मेरे को लगेगा। अभी Building में कितने लोग दुखी भी होंगे पर मेरे को मालूम नहीं है कि ये दखी है या सुखी है पर अपने घर में दुखी होगा तो वो याद आएगा। उनकी चिंता होती है तो ये झूठ है कि कोई मेरे को बोले कि मेरा मोह नहीं है तो मैं नहीं मानूँ। खाली कुत्ता पालते हैं तो भी रोते हैं जब्ती वो मरता है। बिल्ली भी मरती है तो रोते हैं, तोता पिंजरे में बैठा है, टां-टां करता है उसमें भी मोह है। ये क्या है?

प्रेमी : आपने कहा अज्ञान के वश मोह करते हैं?

भगवान् : अज्ञान है या नहीं है, पर ये कुदरत ऐसी है जिसको मैं ने 'मेरा' बोला मैं भी फंस गया, वो भी फंस गया, मेरे मैं ही दुख है, बाकी किसमें दुख नहीं है। मैं बोलते हैं ना, आज पड़ोस में भी है कोई 'मेरा' मैंने बोला, या लगातार Connection उनसे रखा तो दुखी होंगे। जिसने जितना मोह किया उतना दुखी हैं।

ओम

Own में हैं तो निश्चय में है ना, जे द्वैत करें तो फिझूल है, इधर ही गया काम से। थोड़ा भी इधर द्वैत किया तो माना बिल्ली पड़ी है तुम्हारे अन्दर द्वैत की। कुएँ से पानी तो निकाला, पर अन्दर द्वैत की बिल्ली पड़ी थी तो पानी फिर खराब हो गया। हमारे अन्दर बिल्ली पड़ी होगी द्वैत की तो उससे सब खराब ही खराब होगा। पर जे द्वैत की हमने बिल्ली निकाली तो अद्वैत में कोई खराबी ही नहीं है, शांति ही शांति है। कितना दृष्टांत छोटा है पर मतलब बड़ा है कि द्वैत की बिल्ली हमको नहीं रखनी है कि ये और है मैं और हूं। तू और नहीं मैं और नहीं, तुम मेरे से जुदा नहीं है, मैं तुमसे जुदा नहीं हूं। ये पहले वाला भजन है कि ये भेद सनम मुझे तू और नहीं, मैं और नहीं। एक ही तो हैं सब एक ही है। समता योग का खंजर हाथ में ऊठा और सबको तुम काटो, द्वैत वालों को। द्वैत के धूएँ में है सब। अद्वैत की आग में कोई-२ जलता है। अद्वैत की आग कि मेरे सिवाय कुछ बना ही नहीं है। हमारे को शुरू से ये ही आदत है कोई भी बात आएगी तो हम बोलेंगे मेरे सिवाय कोई है ही नहीं। आज ही तुम्हारे अन्दर की सफाई हो जाएगी, जे भगवान के आगे Agree करें कि हमारे को द्वैत पड़ा है। हमारे को कोई बोले द्वैत, तो हम उधर ही बोलेंगे अद्वैत बोलो। तुम काहे का द्वैत करते हैं। हमने कोई दूसरा रखा ही नहीं है, कोई भगत भी नहीं है सब मेरा ही रूप है। जुदा हम देखेंगे, भगत तो अद्वैत कभी सिद्ध नहीं होगा।

प्रेमी : 'मैं ही हूं' ये निश्चय भी है, पर कभी-२ विकार किसी का दिख जाता है।

भगवान : क्या विकार देखेगा दूसरे का? तुम ऊरो नहीं। मैं Free बात करेगा। मैं बोलते हैं कि जो अद्वैत में है कि मैं ही तो हूं तो उनका आवाज मैं ही तो हूं निकले। बस मेरी और कोई बात नहीं है, एक ही बात है कि अद्वैत में हम अद्वैत बोलें, जो मैं अद्वैती हूं, तो मैं कभी भी Life में द्वैत ना करूं, किससे भी द्वैत ना बोलूं, ना देखूं, ना करूं। ये ही तो है 'मैं ही तो हूं'। जो हम द्वैत करते हैं तो मैं ही तो हूं गया काम से। फिर तो हम देह में ही हैं, और मेरे को अच्छा लगता है जो तुम सतसंगी है तो तुमको अद्वैत में ही बात करना चाहिए। द्वैत में बात ही ना करो - चुप।

Contd.2.

हम द्वैत में बात क्यों करें? कर्म बनायें क्या? तो कर्म कौन बनायेगा? जें हम द्वैत में बात करें, पवका कर्म बनेगा ही। हमको शुरू से ही ये ज्ञान है कि हमको दूसरे से कोई बात नहीं करनी है। ना लेना, ना देना, ना करना। कुछ नहीं करना है, बस देखना है, मुस्कराना है कि मैं ही तो हूं, ऐसे देखना है। जो कोई बात करेगा तो मैं देखना है, दूसरा है कि मैं ही तो हूं, ऐसे देखना है। जो कोई बात करेगा तो मैं उसको अद्वैत में लेके जाएगा। पर द्वैत में नहीं लायेंगे उसको, ये है अद्वैत। जभी दूसरा है नहीं तो काहे को उसका विकार देखें, ये कितना पाप है। जो हमारे में मैं ही दूसरा है नहीं तो काहे को उसका विकार देखें, ये कितना पाप है। जो हमारे में मैं ही तो हूं है, फिर किसका कर्म हम देखें? कौन है जो द्वैत की बात ही ना करे, और उसका मुहं से अद्वैत ही निकले?

प्रेमी : भगवान आपके सामने तो अद्वैत पवका होता है, फिर जभी सामने कोई बात आती है तो द्वैत निकल आता है?

भगवान : ये बात नहीं करो। मैं तो सीधी बात करते हैं कि अद्वैत में मैं हूं तो मेरे मुहं से कौन सा शब्द निकले? तूं जे अद्वैत में है, अद्वैत तुमको पसंद है तो तुम्हारे मुख से किया निकले?

प्रेमी : ना चाहते हुए भी थोड़ा विषय जो हो जाता है?

भगवान : ने न्य गये काम से। तुमने निषेध कै तो क्या तू जानी है या अज्ञानी है? पूरा अज्ञानी, ये मर पाना नहीं अच्छा लगता है, थोड़ा-२ ज्ञान थोड़ा-२ अज्ञान, थोड़ा-२ द्वैत, थोड़ा-२ लोभ, थोड़ी-२ इच्छा, थोड़ा-२ अहंकार। मतलब क्या है? जभी कल तुम मर जाएंगे, पर आज तू जीता है तो तुम कर सकता है ना, सब तुम्हारा हाथ में है।

प्रेमी : चाहना होती है तो फिर क्या करें?

भगवान : तुमको सीखना नहीं है, खाली आना जाना करना है। मेरे को आना जाना नहीं अच्छा लगता है। सीखना है तो इधर बैठो, नहीं सीखना है तो उधर जाओ जहाँ तुम सतसंग करते हैं। द्वैत कर, मैं क्या करूं? मेरे को Visible कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती है। Invisible की कोई बात करता है, तो दिल लगती है। जे Visible कोई बात करता है तो दिल नहीं लगती है। माया की बक-२, इस-उस का कर्म, ये संसार ही हो हुआ जगत ही तो हुआ सत्‌मिथ्या कहाँ हुआ? जे हम अभी भी द्वैत करें तो जगत मिथ्या कहाँ हुआ?

प्रेमी : पूरा अद्वैत में कैसे रहें?

भगवान : मैं ही तो हूं तो बाकी है मुस्कराना, दूसरा है चुप मौन करना, तीसरा

है कि जभी आगेवाला कोई द्वैत की बात करे तो उसको लेके जाना है उपर अद्वैत में, ये है तीन बातें। मौन मुस्कराना-मौन ऐसी सूनी नहीं होवे पर मुस्कराना और कोई बात करे तो हम उसको अद्वैत में लेके जायेंगे। हम द्वैत नहीं करेंगे। मङ्गा नहीं आता है उसमें। आखिर तो Level पर आना चाहिए ना, जे Level पर नहीं है तो आना जाना क्या होता है। मतलब ही नहीं है आने जाने का। अपने को जहाँ तहाँ सही सिद्ध करना ये भी द्वैत ही है।

प्रेमी : जे अद्वैत पक्का नहीं है तो स्वभाव संस्कार निकलता है?

भगवान : जे अद्वैत पक्का नहीं है तो स्वभाव संस्कार निकलता है, किसको पक्का है अद्वैत? मैं तो ये ही पूछते हैं ना कि निश्चय बुद्धि रखने का है कि मैं ही तो हूं। कोई हमारे को निंदा बताए कि तुम्हारी निंदा किया तो बोलो उधर कौन है, मैं ही तो हूं।

प्रेमी : भगवान वाणी में आया कि तुम कबूल करो कि मैं द्वैत में हूं तो सफाई हो जाएगी। भगवान हम कबूल करते हैं।

भगवान : अद्वैत कब सिद्ध करेंगे, तुम्हारी कोई निंदा करे तो तुम खुश हैं कि नहीं? या तुम रोते आएंगे शिकायत लेके कि मेरे लिए ये क्यों बोला। कोई निंदा करे तो तुमको दुख होता है तो क्यों दुख होवे, तुम भजन वो याद करो “सजण सो समझु तूं पंहिंजो”। “साख पंहिजीअ खे बुधी दिल थी जदहिं...”। मैं ने ही ये रूप धारण किया है निंदावाले का, मैं हूं तो मेरे को दुख क्यों होवे, उधर भी मैं हूं तो ठीक है, फिर कौनसी बात खड़ी रहेगी? कोई शब्द याद ही नहीं पढ़ेगा, सुझी गारियन में पिण आयी कृष्ण कन्हैये की शहनाई। गालियों में हमको कृष्ण की शहनाई सुनाई देती है। किससे भी तुम Fit नहीं है, ये तो बहुत गंध है अन्दर में कि ये किससे भी Fit नहीं हो सकता है, वो बोलेंगा मैं उपर, ये बोलेगा मैं उपर। क्या है जो इनको ये रोग लगा पड़ा है। इतना ज्ञान उंचा अद्वैत का, उसमें द्वैत शोभा देता है? अभी तुम अपनी भूल भी बताओ और निश्चय भी बताओ।

प्रेमी : हम जभी बात करते हैं तो द्वैत का शब्द निकल आता है? दूसरे की बात हम क्यों करें, अपनी बात करें ना? अन्दर द्वैत पड़ा है बाहर से बोलते हैं कि कुछ नहीं है?

भगवान : द्वैत अच्छा नहीं है फिर तो कर्म बन जाएगा, फिर आना ही बेकार हो गया।

प्रेमी : अभी निश्चय अद्वैत का हो गया है, तो अन्दर स्थिरता आ गई है।

भगवान् : कितनों को स्थिरता आ गई है। कर्म से इतना डरो जैसे जिन्हें भूत से डरते हैं। मेरा कर्म इनसे भी ना बने, उनसे भी ना बने इतनी ब्रादिरी लेके जाएँगे क्या अपने साथ, तो किससे कर्म करें, किसका कर्म सच माने, अच्छा नहीं लगता है। मैं बात करते हैं तो भी हम को ही अच्छा नहीं लगता है कि हम द्वैत क्यों करें, उससे कि तुम सुधरे नहीं हैं।

प्रेमी : कभी-२ द्वैत की लहर आ जाती है।

भगवान् : मैं बोलते हैं ये ऐसी माला है अद्वैत की जो कोई समझे तो कर्म ही ना बनाए और सदा प्रसन्नचित रहे। कभी उसकी शक्ति नें दूआँ नहीं आयेगा। मेरे को कभी द्वैत अच्छा नहीं लगता है। कोई बात करता है हम बोलते हैं कि हम क्यों द्वैत करें? हम क्यों किस के नाम रूप में जायें। कोई पूछेगा कि मेरे को याद करता है भगवान्। तेरे को माना किसको? हमने तो एक-२ बात ऐसे खोलके देखा है। अभी हम समझो गुरु किसको बोलते हैं तो मन बोलेगा कि तुम गुरु किसको बोलते हैं? ये तो शरीर के अंग हैं ना तो गुरु किसको बोला। इतना मैं Deep में जाएगा, जो मैं ही गुम हो जाएगी। किसको मैं बोलूँ कि ये फलाणा, ये टीरा, मेरे को कोई काम नहीं है किससे, कोई भी याद नहीं रहता है, कोई भी।

प्रेमी : भगवान् ये समझा कि किसी से शक्ति टेढ़ी करते हैं तो ये भी Action द्वैत वाला ना होवे।

भगवान् : बाकी प्रसन्नचिन कभी रहेंगे।

प्रेमी : भगवान् अभी आपने बताया कि कर्म से ऐसा डरें जैसे भूत से डरें।

भगवान् : मैं तो डरते हैं। मैं तो किससे कर्म ना करें। ये अभी की बात नहीं है जब से ज्ञान सुना है तो कर्म करने के लिए मेरा ये हाथ नहीं चलता है।

प्रेमी : आज अद्वैत की तीन Points समझ में आयी - मुस्कराना, मौन, द्वैत की कोई बात करे तो उपर चढ़ा दियो।

भगवान् : ये अकल की बात है। तीनों बातें तुम ऐसे करेंगे जो कोई तुमको जीत नहीं सकेगा। तुमको खबर है ना एक दृष्टांत कि २० लड़कियां मोटर में गईं, Accident हो गया। Police ने पूछा किसने चलाई मोटर, कोई नहीं बोला कि इसने चलाई, २० जनी ही छूट, तो किसको पकड़े। देखो अद्वैत में कितनी शांति हो गई। Case ही नहीं बना, ये है ज्ञान।

प्रेमी : अद्वैत प्यारा लगता है, पर मन द्वैत दिखा देता है। कर्म नहीं करते हैं पर द्वैत दिखता है।

भगवान : दिखाये भली पर तू उसको ध्यान ना दे। तू आगे चल अद्वैत में; अपना अपना सबक पक्का कर कि अद्वैत के सिवाय हम कर्म नहीं बनाएँगे।

- कहाँ पर भी तुम शुरू करो बात और तू अन्दर ही बोल कि यह अद्वैत नहीं है तो ऐसी बात ही क्यों करें? अद्वैत में रहेंगे तो शांति ही शांति है। अद्वैत में रहेंगे तो एकदम बस, सब तरफ से आँख बंद हो जाती है। कोई कर्म नहीं बनेगा। किसी को कोई शब्द नहीं बोल सकेंगे, किसी का विकार नहीं देख सकेंगे, दृष्टि से किसी को गलत या Right नहीं देखेंगे, जैसे सब बातों से छूट जाएँगे, कोई कर्म का खाता नहीं रहेगा, बस मौन शांत में रहेंगे, बाकी कोई बात करेगा तो इश्वरीय जवाब निकलेगा।
- कोई कितना भी कर्म करे, जप करे, तप करे, चाहे करोड़ दान भी करे तो भी अन्दर में खाल रहेगा, जैसे लगेगा कुछ खाली है, वो जभी अद्वैत में आएँगे तभी पूरी तृप्ति मिलेगी।
- अद्वैत में ही परम शांति है, द्वैत में शांति कभी नहीं होगी। Unconscious जाएगा अद्वैत से, एक अक्षर भी अद्वैत के सिवाय न बोलें।
- अद्वैत की Meaning है कितना तुमने किसको प्यार किया, कितना झुका, कितना मन को मोड़ा और कितना किसका व्यवहार सुलजाया।
- अद्वैत में है बस निश्चय करना और समानता रखना, कभी भी मन बोले इसको दूसरा देखो तो आँख ही निकाल दो।
- गुरु ने रमज़ बताई है तो तुम उस अद्वैत में चलो ना सबसे, हमने अद्वैत सिद्ध किया है, द्वैत खलास किया है, किस में भी द्वैत नहीं है। तुम्हारी वाणी अन्दर से Flow होवे, अन्दर से खुले, गुरु से लो बाकी अनुभव करके सबको दियो।
- हमेशा अद्वैत का जवाब देने से बंधन में नहीं आयेगा, द्वैत का जवाब दियो तो बंधन ही बंधन है।
- अद्वैत में बेठके स्थित प्रज्ञ के लक्षण दिखाओ।
- तुमने अपने पास द्वैत रखा है, अब तू अद्वैत से द्वैत निकालो

- दादा भगवान को कई लोग बोलते थे आपने ये बात कहाँ से सीखी, दादा बोलेंगे तुम्हारे से ही सीखी, तो देखो, अद्वैत की बोली क्या है द्वैत की क्या है?
- हमको जैसे ज्ञान मिला अद्वैत पवका किया केवल ज्ञान ध्यान और कोई बात नहीं, सिवाय अद्वैत के और प्रपञ्च बंद। पाण मंजि ई। खुद में खुद को झांक कर, दूसरे की बात ही क्यों करें? किससे बैठते थे तो ज्ञान ही निकलता था।
- मैं अपने को सबसे Fit करूं, ये है अद्वैत। हम बोलते हैं सारी दुनिया भले उल्टा चले पर हमारा मन मुड़ता जाये और आत्मा में जुड़ता जाये।
- कल एक ने कहा कि भगवान कहते हैं कि अद्वैत ऐसा है जो जूती भी प्रेम से उठाओ, तो अधिक कठिन हुआ।
- ये उम्मीद नहीं रखना कि मुझे दुनिया रास्ता दे, ये ऐसा चले, ये वैसा चले, अद्वैत मत ये ही है कि मैं सबसे Fit हूं। मेरा शुरू का Photo निकालो जिस दिन से मैं गुरु के पास गए हैं अद्वैत मत को ही पकड़ा है। मेरे को अद्वैत ही प्यारा लगता है। भले गुरु के सामने बैठे रहे पर अपना ही खजाना मैंने संभाला।
- अद्वैत तभी सिद्ध है जो कभी किसी बात में मैं करेंगे ही नहीं, उसका कर्म बनेगा ही नहीं। सारी दुनिया से उसकी मौन है।
- रिवाजी तरह से अद्वैत सिद्ध नहीं करे, अद्वैत खुद सिद्ध होवे कि इसकी ये रहनी है। पानी की महिमा तुम करेंगे, सूरज की महिमा तुम करेंगे, पाँच तत्व की महिमा तुम करेंगे, क्यों कि तुम महसूस करे हैं।
- जो तू है सो मैं हूं, जो मैं हूं सो तू है, ये है अद्वैत।

ओम

मैंने एक को कहा- मैंने Life में अकेला नहीं खाया है, तो उसने मेरी Meaning नहीं समझी, मतलब ज्योति जलेगी तो पतंगे आपे ही आयेंगे, पर मैं किसको Invite क्यों करूँ? पर मेरे सिवाय कोई रह न सके। मैं तुम्हारे सिवाय कोई चीज़ खा न सकूँ।

प्रेमी : भगवान्, प्यार की कमी है।

भगवान् : छी ! जिनको इश्क नहीं है उनको कत्तल कराओ। मेरे को कोई भी प्रेम के सिवाय अच्छा नहीं लगता है। मैं कहेगी तुम्हारा शीश कौवे खायें। तुमने प्यार किस को भी किया है तो अपने वालों से क्या मिलेगा? मेरे को बिल्कुल नफरत है। एक स्वासँ भी उठाऊं तो प्रेम में। तुमने कभी किसी को बोला है कि मैं तुम्हारे बगैर रह नहीं सकता हूँ। ये सूनी Life मेरे को अच्छी नहीं लगती है। मनुष्य इसमें बिल्कुल जमादार है, अपने वालों के लिये जीता है, अपने वालों के लिये खाता है।

हमने कभी Picnic-Spot अच्छा देखा (उसमें एक झूला, एक दो पौधा) तो लगेगा कि वे सब को घूमायें। जब तक सब को घूमा के नहीं आयेंगे तब तक शांति नहीं आयेगी। जो मैं ने देखा है तो सबको दिखायें, जो खाया है वो सब को खिलायें, जो Dress पहना है, वो सब को पहनायें। मैं कहते हैं ये सब मेरा विराट स्वरूप है- एक ये Body नहीं, पर सब।

दृष्टान्तः तीन दोस्त- Laughing संत। हमने तो Life में किस अज्ञानी से पूछा होगा, तो सस्ते में सस्ती Medicine क्या है? तो बोला -हँसना। इतने रूप भगवान् ने क्यों धारण किया है- प्रेम के लिये। प्रेम के सिवाय कोई मिलेगा भी, देखेगा भी। मनुष्य में ऐसी आकर्षण, प्रेम होवे जो कोई उसको छोड़े ही नहीं। इतनी पोथी, पत्ते पढ़ते हो, पर कोई भी भगवान् में नहीं है। जब है ही यहाँ भगवान् तो देह की Address क्यों देवें? इस ज्ञान में प्यार का बड़ा झांडा फैलाना है। पड़ोस में भी सब समझे कि चाहे उनको तुम्हारी Company चाहिए, चाहे तुम्हारा खाना, बाकी दरवाजे बंद करके बैठेंगे तो कोई हमको सूंधेंगे ही नहीं। कबूतर-कबूतरी भी बैठते हैं। सन्यासी, औरत-बच्चे को छोड़कर Jungle में जायेंगे, वहाँ देखेगा, कबूतर कबूतरी कैसे प्यार करते हैं, पीछे इसको मन आयेगा। कभी भी सन्यास नहीं लेना है।

सन्यास है मन का नाश। ये सच्चा सन्यास है जो मन रहे ही नहीं। ना मैं मन ही नहा, ना मैं तन ही रहा...। नाम रूप नाश है..., ये है मुक्ति। बाकी संकल्प विकल्प किस लिये चलते हैं? जिसको भी प्यार किया है, वह सामने आते हैं, बाकी थोड़ी ऐसे सब मिलेंगे। मैं तुमको पाँव पड़ते हैं जरूर इश्क वालों को बनाओ और प्रेम करो- पर अकेला नहीं खाओ।

ओम

प्रेमी : साक्षी भाव में रहने के लिए कोई वचन दीजिए ।

भगवान् : देखो ना, साक्षी मैं हूं तो सब का साक्षी, ये नहीं कि मैं अपने शरीर का साक्षी है, अपने घर का साक्षी है, सारी दुनिया को मैं ऐसे देखें। पर मेरे को मृन में ना होवे मैं साक्षी- साक्षी बस। जैसे दिया जले ना तो दिया क्या देखता है, देखता ही नहीं है, सिर्फ जलता है तो इसके लिए हम क्या बोलें कि दिया क्या करता है, दिये को कौन सी खबर है, रोशिनी तो देता है ना तो दिया क्या देखता है, देखता भी नहीं है सिर्फ जलता है। रोशिनी देता है यह भी उसको खबर नहीं है, ये है साक्षी ।

प्रेमी : कभी-२ कोई Scene आता है तो अपने को Involve करना पड़ता है, साक्षी बनके रह नहीं सकते हैं?

भगवान् : तुम Scene में Involve होता है, पर Scene तो Disappear है उसको छोड़ दो, Scene करो uscene (Unscene)। अभी इधर मैंने Paint किया तो दीवार ना होवे, कागज ना होवे तो किधर Paint करें, माना दीवार है तभी मैंने उधर छपाई किया, नहीं तो किधर करें। अगर दीवार भी नहीं है, कागज भी नहीं है, Scene भी ऐसे ही है, मिथ्या। जैसे दीवार पर कुछ भी Paint करो तो वो मिथ्या है, बाकी जो पर्दा है वो सत् है।

प्रेमी : भगवान्, अभी आपने बताया कि दिये में रोशिनी है पर उसको खबर नहीं है तो वो स्थिति कैसे है?

भगवान् : हम इतनो को रोशिनी दें, तू बोलती है इधर रोशिनी है, भली है पर मेरे को नहीं लगता है कि मेरे को कुछ है, मैं तो अपना बताते हैं ना। मेरे को ये नहीं है कि मेरे में रोशिनी है या मैं ने इनको रोशिनी दिया, एक आदमी को भी मैं ने कुछ नहीं दिया कि ये मेरे से ज्ञानी हो गया, ये होशियार हो गया, ऐसे हो गया, वैसे हो गया। वो मेरे को नहीं है। दिये को भी क्या खबर है कि मैं रोशिनी देता हूं, क्यों कि दिया जड़ है, मेरे को भी ये नहीं आता है कि मैंने किस को भी दिया है ज्ञान या रोशिनी दी। उसमें दो जने हो गए ना, देनेवाला और लेनेवाला, ये है Mystery की बात, History की बात नहीं है। मेरे को भी दिया याद आ गया क्यों कि मेरे को ये है कि दिये के नीचे तुम कौन सा भी कर्म करो, दिया बोलेगा नहीं, रोशिनी है भी पर बोलेगा कुछ नहीं, बोलेगा तुमको जो करना है सो करो। करते नहीं है

ये सब कुछ? पाप भी होता है, पूण्य भी होता है, नहीं भी होता है, होता भी है। सब कुछ होता है पर हमँको शांति है, इधर हलचल नहीं होती, संकल्प विकल्प नहीं आता है। जे संकल्प है तो किसके लिए अच्छा, किसके लिए बुरा संकल्प चलता है, नहीं तो संकल्प ही नहीं है, विचार की सेजा में सोओ। 'तू ही कर्ता है', ब्रह्मा भी मैं हूं, विष्णु भी मैं हूं, शिव भी मैं हूं, पर तीनों से मैं हूं न्यारा। अभी न्यारा कैसे होगा तू ही बता? न्यारा तो होना ही चाहिये ना। सब कुछ देखते हुए भी नहीं देखूं, सब कुछ सुनते हुए अन्दर Touch ना होवे, जैसे कुछ होता ही नहीं है। भली कोई भी बात करके जाता है तो मेरे को चिंतन नहीं होता है, ये है कुदरत। वो भूल करेगा, अभी क्या मैं जवाब दियूँ। एब Second में मैं एक शब्द बोलेंगे और वो शब्द लेके बैठ जाएगा। शांत होगा, उसको फायदा हुआ ना, मेरे को थोड़ी ही खबर है कि मैंने कुछ बोला या किया। उसको फायदा है तो ठीक है हमारा क्या जाता है, मगज़ नहीं चलाने का है। अभी देखो मैं इनके लिए दिमाग चलाऊं या सोचूं तो कितना मेरा मगज़ खराब हो जाये, तू बोल, याद सब है, ये जा रहीं है, ये आ रही है, पर चिंतन नहीं है।

प्रेमी : भगवान आप को तो कुछ पता नहीं है पर हमको तो मालूम है ना कि आप की रोशनी से हमारा जीवन क्या से क्या हो गया है?

भगवान : जैकर ये श्रद्धा ना रखे तो मैं इनके कान में जाके बताएँगे क्या? उनकी श्रद्धा सुनती है मैं नहीं बताते हैं, इनकी श्रद्धा इधर Catch करती है।

प्रेमी : ये तो भगवान पहले दिन ही आप कुछ डाल देते हैं, श्रद्धा भी हम लेके नहीं आये थे, ये अजीब बात है।

भगवान : अजीब खेल है ना। अजीब है ना भगवान भी।

प्रेमी : आपके वचनों से अजीब तृप्ति आ गई है।

भगवान : मैं ने एक भी वचन नहीं दिया है।

प्रेमी : अनमोल वचन दिये हैं।

भगवान : सब झूठ है।

प्रेमी : भगवान 98% Spritual - 2% Physical को खोलिये?

भगवान : 2% Physical क्रियाकर्म जो भी है, दुकान है, Office है, कुछ भी है, पर 98% Spritual हमको भगवान की बात करने की है। समझो हमारे पास कोई ग्राहक आता है, उसमें भी न चाहते हुए अचानक मेरा ज्ञान निकल आयेगा, क्यों कि मुख में भगवान बैठा है। व्यवहार भी भगवान के सिवाय नहीं चलता है। 2% Physical इसीलिए बोलता है क्योंकि शरीर निर्वाह के लिए कुछ तो होगा ना। सब बात में Spritual अंच्छा है, जो परमात्मा को प्रगट करे, पर तुम्हारे व्यवहार में Spritual प्रगट नहीं होता है। मेरे को कोई शुरू में भी पूछता था बच्चे कितने हैं? मैं बोलता था अनगिणत। Flat कितने हैं? जो दिखते हैं, वो Flat मेरे हैं। तुम्हारा घर किधर है? हमारा घर बेगमपूर में है। सब बोलते थे, यह Spritual बात करते हैं। जो मेरे अन्दर है, वो ही बाहर है। Spritual के सिवाय जीना युशकिल पड़ता है। देह अध्यास मे कोई Bargain करता है तो Hospital में देता है। ज्यादा पैसा किधर जायेगा या मलबा खरीद करेंगे, या सोना चांदी। तुम सब बोलो किधर रखेगा? कहाँ रखेगा? खाली कमाओ(2)। फिर मेरे को बोलेगा, मेरे को तो सत्संग का time ही नहीं मिलता। अजब बात है, चाहे Officer होवे या सेठ होवे। हमारा दादा बोलता - एक माई बोलती है, Sunday को Driver नहीं आता, तो दादा भगवान ने बोला, Sunday का Double पैसा दे, उदारचित बन तो आयेगा। हम घर में, व्यवहार में, शादी में, खर्च में कमी नहीं करते हैं। जभी सामने कोई यज्ञ आवे, तो हम कैसे रहें? कैसे प्रेम होवे? पर किसको करना भी नहीं आता, समझ में भी नहीं आता, कि हम यह पैसा किधर करें? सत्संग में प्यार करने से क्या होता है? यह नहीं कि, तुम प्रसाद करो - पर जहाँ रहते हो, खाते हैं, वहाँ किराया भी नहीं भरते हैं, प्रेम नहीं करते हैं, ऐसे ही नशे में आते हैं और चले जाते हैं। ये तुम्हारा नशा मेरे को अच्छा नहीं लगता है! तुम पैसे लेके आते हैं, वापस लेके जाते हैं, खाने पीने में भी कंजुसी करते हैं, Miser हैं।

इधर तो उदारचित होने का है। बेटा-बेटी को नहीं देना है, लेकिन ये संगत मेरी जान है। संगत के सिवाय मेरे को कोई परान्द नहीं

आता, क्योंकि जभी वो दुनिया छोड़ा तो ये दुनिया मिल गयी। अभी ये महोब्बत की दौलत किसपर लुटाऊं। यह क्या बात है जो Purse वापस लेके गया, प्यार किसको नहीं किया। कबीर ने उधार लेके भी संतों को खिलाया। गुरुनानंक बोलता है "कणका जिस मन जीव बसावे ताकी महिमा गणी न जावे"। इतना कणा (कतरा) भी कोई भगवान का ले, उसकी महिमा गनी न जावे। इतना ज़रा भी ज्ञान सुनो तो मुझे खुशी है, क्योंकि दुनिया तो गिरी पड़ी है, देह अध्यास में मरी पड़ी है। तुम भी पहले भगवान को अन्दर कहाँ बिठाते थे? मन्दिर जाकर पैर पड़ते थे, इधर तो रात दिन आँठे ही पहर समाधि है, सिख योगी से उस्तादी। यहाँ तो आठ ही पहर समाधि है, लगातार, क्योंकि इधर ज्ञान सुनर कर बहुत डाला है, इतना पक्का किया भगवान, जो भूलने वाला नहीं है। अभी जुबान से वाणी निकालो तो गल्त शब्द तम्हारा Life में न निकले। ज्ञान सुनने के बाद तुम्हारी कोई शिकायत न करे कि इसने यह गल्त शब्द बोला। घर में भी और इधर भी, गल्त शब्द निकालने का तुम्हारा क्या मतलब है। कोई भी शब्द निकालो, पूरा Study करो, उसका फल क्या निकलेगा? तभी शब्द निकालो, नहीं तो मौन अच्छी है। शब्द ऐसा हो जो दिल खींच लें। दिल लेने में दिल चाहिए, प्रेम करने से प्रेम बढ़ता है, देने से बढ़ता है, लेने से नहीं। कई लोग माँ, बहन, ससुराल सब से प्रेम मांगते हैं, तो भिखारी है क्या? कोई भी हमारे को प्यार न करे, हम देते रहेंगे(3)। हमको वापसी की ज़ज्जरत नहीं है। मैंने खाली देना सीखा है, लेना नहीं, तभी तुमको यह ज्ञान लगेगा। जो एक बार कोई ले, तो मालापाल हो जायेगा। इसका उजूरा देना मुश्किल है। उजूरा यह है जो तू सब को प्यार कर। करना नहीं, Doer बनना नहीं, पर जो तुम्हारे सामने इत्फाक से आये, उसको प्यार करो। तुम यह पक्का समझना, तुम भले कितना भी करो, पर वापसी में कुछ लेना नहीं चाहिये। "आस न करे और की, आप करे उपकार" आस न करे, पर उपकार करता जाए-२, क्योंकि है तो भगवान का यज्ञ! सब चीज़ उसकी, मेरे पास अमानत है, मैं कौन हूँ, देने-लेने वाला। तू तो है ही नहीं, One without Second जहाँ दूसरा नहीं है, तो प्यार करने में हम थके क्यूँ। द्वेष करना तुमको आता है, पर प्यार करना नहीं आता। गल्त शब्द बोलना, गुरस्ता करना आता, पर प्रेम करना, नीचे से बोलना नहीं आता। नीचे से बोलने से तुम छोटे हो जायेंगे

क्या? बात समझो, एक किलो रखा है- पछाड़ी को 2 grams. आयेगा। वो सबसे उपर होगा। ऐसे ही, हमारी गीता भी सब ग्रन्थों से छोटी है, पर है सर्वश्रेष्ठ। जो छोटा है, वो ही बड़ा है। जो बड़ा है वो तो उंठ है, गधा है।

प्रेमी : हालत आती है तो अब strong हो जाते हैं, आपसे जुँड़ जाते हैं।

भगवान : कोई भी हालत से हम डरे क्यूँ? डरे हम गल्त शब्द से गल्ल वाणी से। किसको धिक्कारो नहीं। तुम्हारे लाल झरना क्यूँ नहीं आता है? गुस्सा करना आता है, Emotion करना आता है। खासकर यह आदमी लोग बकरी पर राज करते हैं, मेरे पर राज करे तो बताए। तुम उसको Weak समझके राज करते हैं कि मैं खिलाता हूँ, मैं कमाता हूँ, तो उसकी प्रारब्ध है ना? जैसे नौकर हमारा Ration Card लेके जाये, बोले मैं खिलाता हूँ, तुम बोलते हैं मैं कमाता हूँ, माई खाती है तो उसकी प्रारब्ध कहाँ गयी? गुस्सा करने का क्या मतलब है। एक माई ने पति को बोला-गुस्सा भले करो, पर एक मिनट में हँसना भी ज़रूर, नहीं तो मेरा दिमाग गरम हो जायेगा। तो देखो, उसने उराका Power कम कर दिया।

प्रेमी : चलते चलो- चलते चलो, आगे का सोचो नहीं?

भगवान : "कौन जाने कल की - खबर नहीं इक पल की"। तो कल के लिये क्यों सोचते हैं? कल नाम है काल का, तो काहे को सोचें। चलते चलो-२, बस तुम अपने में चलो, सत् सरलता में चलो। कोई दोस्त दुश्मन नहीं बनाना, यक की नज़र रखो, ईश्वर की। सुबह से रात तक हमको प्रसन्नचित होके दिखाओ, बस एक दिन ही तुम प्रसन्नचित रहो। तुम्हारे Face पर कोई लकीर न आऐ। शान्त, एकरस, मुस्कराना।

प्रेमी : पहले इच्छा पूरी नहीं होती थी, तो रोना आता था?

भगवान : किस बात के लिये तुमको रोना आयेगा, क्या कारण है, रोने का मतलब क्या है? अभी दुनियाँ से तृप्ति है, ज्ञान से तृप्ति है। भगवान को दूँढ़ना नहीं पड़ेगा, भगवान तो है मेरे पास। हरबात के लिये ऐसे Peace रखो जैसे तृप्ति ही तृप्ति है।

प्रेमी : ज्ञान से रोज Change हो रही है।

भगवान : एक दफा विचार करो कि मैं क्यों नहीं मुस्कराता, क्यों नहीं एक रस रहता, काहे को दूसरे में मतलब रखते हैं? काला मुँह है तेरा। जो हम

दूसरे में मतलब रखेंगे, तो भगवान ही हमारी बात पूरी नहीं करेगा, तो तुम भी दुखी होगा ना? तुमको राजी करनेवाला तेरा ज्ञान है, तेरी समझ है, तेरा ख्याल है, पर दूसरा कोई नहीं है। भगवान गुरु Impossible को Possible कर सकते हैं। पर तुम्हारा मन वेवकूफ बोलता है, ये कैसे होगा, कैसे करेंगे, तो यह विकल्प नहीं करो। संकल्प सिद्धि हासिल करो। जो आत्मा के निश्चय में है, उसको संकल्प सिद्धि, व्यंवहार सिद्धि, उपदेश सिद्धि आ जाती है। तुम्हारी वाणी में भी असर होगा। पर जे तुम्हारा निश्चय पक्का नहीं है अपने में, तो अपने से हारे क्यों? दुनिया से जीते, अपने से हारे, तो क्या ये ठीक है। दुनिया को जीतने से क्या मिलेगा? भले राजा लोग, राजाई हङ्गम करे दूसरे को, जे अपने मन को नहीं जीता तो सब बेकार। अपना मन वश है, तो सब मिला। "मन जीते जग जीत" शुरू में मन जो बोले उल्टा करो, यह रमज़ सीख लो। तुम बाहर सहारा ढूँढते हैं, पर जो सहारा उसमें है, वो तेरे में है। जो दुनिया की विद्या है वो अविद्या है। कोई होशियार वकील है तो मेरे से बात करे, तो मैं उसकी चम्पी करेंगे। सब चोर-ठग- बदमाश हैं जो खाली पैसार करते हैं। मुझे डाक्टर, वकील किसीमें विश्वास नहीं, जो अपने में है। सब Down करने वाले हैं।

ओम

पहले जभी सृष्टि नहीं थी तो केवल निराकार ही था, फिर जभी निराकार ने संकल्प किया तो एक से अनेक हो गया, अपना खेल रचायां एक से अनेक हो गया। पहले खाली निराकार ही था, इच्छा किया तो मनुष्य बन गया। "चाह चमारी चुहिरी अति नीचन ते नीच, तूं तो पार ब्रह्म था जो चाह न होती बीच"। इच्छा करना ही अज्ञान है। इच्छा है ऐसी बली गुमाती है गली२, और मचाती है मन में खलबली। जब भी मन में इच्छा उठती है और जब तक वो पूरी नहीं होती है तो बेचैनी रहती है, शांती चली जाती है। मनुष्य समझता है मेरी इच्छा पूरी होगी तो मैं तृप्त हो जाऊंगा। पर एक इच्छा पूरी हो गई तो उसके पीछे दूसरी इच्छा उठेगी। मेरे को एक सौ रूपया चाहिये तो मिलेगा, फिर हज़ार की इच्छा, फिर बंगला गाड़ी वगेर२। इच्छा का सोराख कभी बंद नहीं होगा। एक इच्छा के पीछे लाख इच्छाएं होगी। फिर वो इच्छा का बीज बड़कर दृखत बन जाएगा। सारी दुनिया दुखी है तो एक इच्छा और अहिंकार के कारण। इच्छा पूरी हुई तो भी दुखी और न पूरी हुई तो भी दुखी।

समझो किसी को बेटें की इच्छा हुई और वो पूरी न हुई तो मांगके बेटा लीया, फिर ऐसा बेटा मिला जो सारी उमर उसकी शोवा करनी पड़ी। एक मार्ड को भगवान ने बेटा दीया, तो सारा दिन सोता ही रहता था, उठ नहीं सकता था, उसकी शोवा ही करनी पड़ती थी। एक माई ने इच्छा से बेटा मांगा, तो दोनों बेटे पागल निकले, जिनकी शोवा करनी परी। नामदेव संत ने भगवान से घोड़ा मांगा, भगवान ने उसको टूटा दिया, जिसको संभालना ही परा। मतलब इच्छा से दुख ही खरीद कीया। एक दूसरी माई को बेटे की इच्छा थी, बेटा पैदा होने पर भी उसे ऐसे लगा कि बेटा नहीं हुआ है, उसकी दिमाग पर इतना असर हुआ जो वो Coma में चली गई, कई बरस Coma में रही। एक इच्छा ने कितना दुख दीया। इच्छा ऐसी है जो मनुष्य को ब्रह्म पद से गिरा देती है। जैसे एक चील मांस के टुकरे के लीये नीचे आ जाती है धरती पर। जभी इच्छा नहीं है तो मनुष्य शाहों का शाह है। "चाह गई, चिंता गई, मनवा बेपरवाह, जिस जीव को चाह नहीं वो शाहन का शाह"। जभी इच्छा करते हैं तो फकीर हो जाते हैं, सबके आगे गुलाम होना पड़ता है, कमज़ोरी आ

जाती है।

इच्छा मनुष्य को दीन बना देती है। एक इच्छा पूरी करने के लिये राजा ने कुत्ते के साथ खाना खाया। इच्छा पूरी न होगी तो क्रोध उत्पन्न होगा, क्रोध से बुद्धि नाश हो जाएगी। Energy नाश हो जाएगी। इच्छा से तृष्णा पैदा होती है, तृष्णा से वासना बन जाती है, फिर वही वासना जन्म मरण का कारण बनती है।

जैसे किसी को इच्छा होती है कि मेरे को फलाणा बंगला चाहिये, तो जब तक बंगला नहीं मिलेगा, तो तृष्णा बढ़ती जाएगी, और अचानक मर गया तो वासना के कारण उसमें भूत बनकर आएगा। जैसे सूरत में एक बंगला है, उसको माई ने बहुत प्यार से बनाया, अचानक वो मर गई, तो आज तक सब बोलते हैं वो माई सफेद साड़ी में रोज़ आती है।

अगर किसी को इच्छा है तो शाहूङ्ह भी गरीब है। अगर इच्छा नहीं है तो बिन कौड़ी बादशाह है। अस में जैसे कीड़ा है तो फैंक दें, तो वह इच्छा कीड़े कीड़ा देखेंगे तभी इसका छूटेगी। राजा को शराब पीने की इच्छा हुई तो वज़ीर को बोला शराब लाओ। वज़ीर शराब के साथ बकरा, वैप्या, डाक्टर और कफन सब साथ में लाया। तो राजा को ज्ञान आ गया, 'इच्छा को कैसे जीतें?' जब जगत मिथ्या, ब्रह्म सत्य हो तो अंदर से पूछो कौन सी इच्छा करें? अंदर में वैराग जागा होगा तो क्या मांगूँ कुछ थिर नाहीं। कोई भी ऐसी चीज़ हमाशा के लिये स्थिर नहीं रहती है। "सदा न संग सहेलियां, सदां न काला केस, सदा न इस जग जीवणा, सदा न राजा देस"। इच्छा तभी उठती है, जभी हम देह में है, पर सत्तुरूँ हमको अपना स्वरूप याद दिलाते हैं कि तू तो पार ब्रह्म परमात्मा है, तू यह देह नहीं है। तो देह से सत्तुरूँ उपर कर देते हैं।

"जो इच्छा तजे है, वो अनङ्गिष्ठि फल पाये हैं। जो स्वाद तजे हैं, वो अमृत पाये हैं। जो राज तजे हैं, वो महाराजा होते हैं। जो ख्वार्थ रखे हैं, वो घर घर भटके हैं।"

तू इच्छा छोड़ेगा, तो भगवान को आकर चिंता लगेगी, हम इच्छा करेंगे तो भगवान चिंता करना छोड़ देगा। गुरु बताते हैं तू ही एक से अनेक हो गया है, तेरे से जुदा कुछ भी नहीं है। इच्छा तब होगी जब

तेरे से जुदा कुछ होवे, जहाँ तहाँ अपना ही दीदार है, सब जगह मैं ही मैं हूं, मैं ही चलता फिरता गुमता हूं।

अंदर में द्वेत है तो इच्छा रहेगी। इच्छा कितने प्रकार की होती है : पदार्थ की, माया की, दुनिया की, पर मेरे को कोई अच्छा बोले तो ये भी एक किसम की इच्छा है, जो दुखी करती रहती है। सब बोलते हैं इच्छा करना Natural है, परन्तु अलगर किसम की इच्छा उठती है, क्यों कि जैसेर मनुष्य Company करता है, वैसेर इच्छा उठती है। गुरु का संग करने से, इच्छा चले जाती है। इच्छा को दबाना भी नहीं चाहिये। गुरु से उत्तर प्रश्न करके अपनी इंच्छा को काटें। गुरु कैसे भी हमारे इच्छाओं को काटेंगे या पूरी खटाई दिला देंगे। इच्छा को दबायेंगे तो अंदर की बीमारी आ जायेगी। अंदर Unconscious में वो बात चले जायेगी और टाईम पर निकल आयेगी। गुरु से सलाह करके एक२ बात करके उनसे नर्णय करना है। पहले अशुभ इच्छा छोड़ने के लिये शुभ इच्छा करनी पड़ती है। जैसे भगवान पाने की इच्छा, शांति पाने की इच्छा, फिर अपने ब्रह्म पद में सिथ्त होने के लिये दोनों से उपर उठना पड़ता है। जैसे भगवान पाने की इच्छा भी भगवान पाने में रुकावट है, क्यों कि दो नहीं रहेगा, क्यों कि एक ही परमात्मा परसर गया है, तो कौन पायेगा। पाया कहे सो मसखरा, खोया कहे सो कुङ, पाया खोया कुछ नहीं, जियों का तियों भरपूर।

ओम

प्रेमी : भगवान आप सब कारण और परिणाम को जान सकते हैं?

भगवान : अगर तुम स्थूल 'को जानता है, एक तो कोई फल हमको मिलेगा तो हम बोलेंगे किस कारण मिला है।

(1) तुम रोज़ खोज करेंगे कि ये मैंने किया था, तभी ये फल मिला है।

(2) अगर Life में मैंने चोरी ठगी कुछ भी किया है तो सज्जा ज़रूर मिलेगी। ये नहीं हम बोलेंगे ये सब Passing हो गया, पर इधर अंदर Un-conscious में ज़रूर चोरी याद आएगी तो ज़रूर भोगेगा। फिर कोई इतनी तपस्या करे जो उसको Total भूल जाए अभी।

(3) तुमने मोह के कारण, दुख के कारण, कुछ भी छोड़ा तो ये ही तुम्हारा अज्ञान है। इसी से तेरा कारण शरीर है और शरीर से बात Repeat होती है। फिर ये मन तेरी Test लेगा, कहाँ॒र गिरने के गढ़े हैं, मोह है, क्रोध है, दुख है, सुख है। ये ही कारण तेरे को दिखाएगा। मन Test ना ले तो खशावी का पता कैसे चलेगा, कि बीज कच्चा है या पक्का है।

(4) पुरानी आदत पड़ी है अन्तःकरण में, माया की बात करने की, इस उस से, वो तुम कुछ भी Change करने जायेंगे, पर कारण जो तुम्हारे साथ है अज्ञान, आपस में तुम भले ज्ञान की बात करते हैं, पर ज्ञान के साथ॒र Un-conscious में जो पड़ा है वो माया में फिर गिर जाते हैं, ये है अज्ञान।

(5) प्रेमी : भगवान सूक्ष्म में अंतःकरण की वासना कैसे नाश हो, ना चाहते भी आँखें देख लेती हैं।

भगवान : ना चाहते हुए? तेरे अंदर की वासना जो चाहती है आँखों से ना चाहा, मन से ना चाहा, उपर से ना चाहा, पर वो Deepमें जो है वो चाहता है। तुम्हारी वासना को हम Cut करें, तो तुमको दुख होगा। पर जभी तुमको टके॒र की चीज़ नहीं चाहिए। देखो एक राजा है वो किसकी गुलामी करेगा? ये तो शौंक की बात है कि मैं खुद ही खुदा हूं, मैं क्यों वासना रखें?

(6) प्रेमी: भगवान किसी से भी बात करते हैं तो स्ताननेवाले का Unconscious अंदर Repeat होता है?

भगवान् : तू कर्ता होके बात करता है, तो याद भी है, पर हम एक Minute में बात करत हैं, फिर पूछते हैं योगी से कि हमने क्या बोला? तू कर्ता होके बोलता है तभी तुमको दूसरे का भी अज्ञान Repeat होता है और अपना भी कारण बना ही पड़ा है, क्यूं कि तुम कर्ता है।

(7) तुम को ज्ञान कब लगेगा, अंतःकरण में वो ही भूत खड़े हैं। अंतःकरण बने क्यूं? जगत् सत् है तो अंतःकरण भी सत् है।

(8) कृष्ण का Conscious यकङ्गो। चोर चण्डाल में जो एक देखे वो सच देखता है।

(9) प्रेमी : भगवान् हम बीमार होते हैं तो चिड़चिड़ हो जाती है, पूरा Unconscious निकल आता है। जब Strong होते हैं तो कैसे Unconscious को पूरा छत्त्व करें!

भगवान् : वो चिंता तुम ना करो, गुरु के वचन के अर्थ में गुरु की बात समझो! गुरु की रमज़ा से ही तम्हारा अंतःकरण नाश होगा। जहाँ से गुरु बात करे वहाँ से Catch करो।

(10) प्रेमी : भगवान् आपके Consciousness को जाने तो पूरा ज्ञान अंदर आ जाएगा?

भगवान् : जभी तुम्हारे दिल में सच्चाई है, तो अंदर आपे ही मेरा Photo आएगा, पूरा गुरु का Conscious। पर जभी अंदर साफ नहीं है, तो तू मां पड़ी है। इस ज्ञान में ये खास बात है कि मैं तिनके को भी दुखी ना करूँ। जे तिनके को भी दुखी किया तो ज्ञान नहीं है गुरु का।

(11) प्रेमी : भगवान् आपका Conscious जानने के लिए लगता है केवल वाणी की ज़रूरत नहीं है, पर आपके सामने Vibration की ज़रूरत है, तभी आपका Conscious जान सकते हैं।

भगवान् : हाँ सच्ची बात है, कितनी भी वाणी सुनो और सुनाओ पर जब तक गुरु का Vibration नहीं मिलता है तो Conscious को नहीं जान सकते हैं। भगवान् की वाणी सुनो, फिर अपने को जानो, फिर उसके बाद सारी दुनिया का अनुभव होता है।

(12) गुरुदेवजी (साई) ने अपने गुरु दादा भगवान् के लिए श्रद्धा प्रेम, गुरु भक्ति से भर दिया, ऐसा देखकर हमारा अंतःकरण भी इन्हीं शुद्ध भवनाओं से भर जाता है।

Contd. 3.

(13) जिसका Unconscious जैसा है, वो वहाँ से बात करता है, तो फिर ये जीव भाव मरे कैसे? पहले रथूल से नाता दूटे, फिर सूक्ष्म से, फिर कारण शरीर से अज्ञान जाए। तिल२ मरेगा, खत्म होगा।

(14) प्रेमी : भगवान किसी के स्वभाव का पत्ता है वो Unconscious में पड़ा है, तो Oneness की feeling नहीं होती ?

भगवान : तू किसी के धर्म में क्यों गया? अगर किसी दूसरे के धर्म में गया, तो प्यार कभी नहीं होगा। क्यों न हम अपना Unconscious change करें। हमारे Unconscious में भगवान बैठे, दूसरा नहीं।

(15) प्रेमी : भगवान आप का Conscious जानने से ही ज्ञान होगा, नहीं तो बीमार कर देगा ज्ञान।

भगवान : ज्ञान बोझे की तरह नहीं उठाना है, पर Life बनती है। हमारे हाथ में है, मैं दर्द में रहें तो मैं किसी का दर्द भी उठा सकते हैं, तो मैं नींद कैसे करूँ? अद्वैत में ही परम शांति है। द्वैत में शांति कभी नहीं होगी। Unconscious भी जाएगा अद्वैत से, द्वैत से नहीं।

(16) प्रेमी : भगवान अंतःकरण खलास करो।

भगवान : अंतःकरण में भगवान है तो वो सोने का हो गया, फिर वो क्या करे प्रेम ही प्रेम। अपने को जानने में इतना Busy रहें कि दूसरा दिखे ही ना। भगवान के सिवाय दूसरा नहीं है। दृष्टांतः चार देवियां थीं लक्ष्मी, सरस्वती, शप्ती और शांति। शांति देवी ने बोला कि तुम भूल जाओ राजा सिर्फ ५ मिन्ट के लिए कि मैं राजा हूँ। भूलने से ही राजा के सिर का दर्द चला गया। शांति आ गई - आप विर्सजन...। सिर का दर्द है तो कारण है। कारण के सिवाय कोई कार्य नहीं। समझो राजा को कोई चिंता थी, राजाई में कुछ न कुछ Tension होती है तो ऐसे ही कारण के सिवाय कार्य नहीं होता है। जो Unconscious है वो मेरा कैसे है? समझो तुम किसी को सत्ता देंगे, तम उसका Unconscious देखेंगे या नहीं? तभी प्यार होगा? अगर Unconscious पूरा खत्म नहीं है तो ढोंगी है तो तुमको प्यार भी नहीं होगा, तो तमने किसको प्यार किया? जो उसके Unconscious में सध है तो बाहर से भी सध्या होता है, अगर झूठ है तो बाहर से भी झूठ गिलता है। बाहर से कोई वाणी मीठा बोलता है तो वो मीठा न हुआ, पर Unconscious में प्यार है? कोई दोस्त रखता है

पर मतलब कौनसा पूरा करने आया है? वो साक्षी तुम्हारा अंदर में बता देगा।

(17) प्राण एक Second में चले जायेंगे तो साथ में कर्मों की गठरी चलेगी। Unconscious में कर्म Count होते हैं।

(18) प्रेमी : भगवान Unconscious का पत्ता कैसे पड़े?

भगवान् : जभी तुम ठोकर खाओ और संसार भासे तो अपने को भूंडा लगाना अंदर में कि सुजागी बङ्गी या सुजागी से ठोकर? तुम सुजाग है तो कल्याण है। कल्याण ये है कि मैं ही नहीं, है ही अल्लाह, हमको अपनी खुदी को ही खाना है।

(19) शरीर नहीं तो जन्म मरण किसका होगा, न जन्म ना मरण, न शोक, न मोह न भूख न प्यास है। कारण शरीर में विकार है, आत्मा में नहीं। जैसे गहरी नींद में मालूम नहीं है अज्ञान कहाँ से आया, दिखाई दिया, स्वप्न क्यूँ दिखाई दिया? दूसरा तो वहाँ है भी नहीं। ऐसे ही अविद्या के कारण मनुष्य को अपना अज्ञान दिखाई नहीं देता है। नींद में अज्ञान समाया हुआ है। सपना आए तो भी ठीक है। पत्ता तो पड़ा न कि अज्ञान पड़ा है। गहरी नींद ऐसी अल्प है, इतनी गहरी, जो खुद को अज्ञान का पत्ता नहीं पड़ता, पर ज्ञानी तो जागंदी जोत है, हर वक्त जागृता में।

ओम

मौन है सोन। मेरी Gift है मौन। मौन में ज्ञान पक्का होगा। मौन से संकल्प विकल्प, द्वैत द्वेष खत्म होते हैं। मौन ही सर्वात्म भाषा है। ज्ञान के बाद मौन करने से शक्ति बढ़ती है, इसका एक दिन अनुभव करो। ज्ञान के बगैर मौन नहीं होती है। मैं Aggressor बनकर कुछ भी बात नहीं करेंगे, Defence में बात हम करें या नहीं करें Free हैं। एक शब्द भी घर में हम क्यों बोलते हैं? बोलने से कौनसा सुर निफल सफल है। कभी माँ बेटी से ठानी नहीं बनेंगे। कुछ भी बोलने से शियाणप सिद्ध होती है। I know, I am. इसने क्या बोला? एक बार मौन होगा तो तुम्हारे लिये कोई झूठ नहीं बोलेगा कि इसने क्या बोला। जो कुछ अन्दर चले उसको ज्ञान देकर निकाल दो। हगेशा के लिये मौन हो जाओ। पहले तुम देवता बनो, फिर खुदा होगा। जुबान की मौन से मन की मौन शुरू हो जायेगी। मन को

हर हालत में रहने की आदत डालो। मन को सिखाओ, तुम देखोगे कि जो वचन अच्छा नहीं लगा था अब अच्छा लगेगा। मन को मौन का पाठ सिखाओ "मन तू ज्योति स्वरूप है, अपना मूल पहचान" साधो चुप का है संसारा। ज्ञान के पहले कोई लाख समझाये, चुप रहो, तो नहीं रह सकेंगे, क्योंकि मन पर Control नहीं है। हम कहेंगे कि आगेवाला क्यों नहीं सुनता है। हम सबको ज्ञान रुकाने लग जाते हैं। जब तुम Balance में आओगे तो मौन आ जाती है। तुमको मौन अच्छी लगने लगे। बड़े Barrister, Doctor कम बोलते हैं। बड़ा होवे सो कभी ना डोले, थोथा होवे सो बोले। हम हर वक्त तुमको मौन के लिये बोलते हैं, पर तुमने बैल टटूं की तरह समझा ही नहीं है। मुझे तो गुरु का शुकराना है कि स्थित और मौन के सहारे अन्दर और बाहर का मजा लेना सिखा दिया। मौन उसको आती है जो सारी ज़िंदगी का काम उतार के बैठा है। सच्ची मौन से सब प्रारब्ध के कर्म भर्सम हो जाते हैं। मन से कर्म न बनें, मन से मौन, मन न चले।

मौन उसकी सच्ची है जिसका अंदर का सब अहंकार खत्म हो जाये। मौन उसकी सच्ची, जिसकी आसक्ति नहीं है। अंदर से Emotion है, बाहर से मौन करते हैं ये सच्ची मौन नहीं है। जानते हुए भी चुप

रहना, खबर रहते हुए भी बेखबर रहना, ये सच्ची मौन है। मौन करेगा तो न दोस्त बनेगा न दुश्मन। ज्ञान का पहला सबक है मौन। जब तुम बात करते हैं तो देह में आ जाते हैं। मौन से पक्षपात रहित रहेंगे। मौन से एक भी विकार नहीं आयेगा, अंदर ही खत्म हो जायेगा। जिसने एकान्त का मज़ा नहीं लिया, समझो ज्ञान नहीं लगा। नुकसान देखकर भी चुप करना पड़ता है, तभी आगेवाला सीखेगा। बात करता है तो भगवान से जुदा हो जाता है। आत्मा में कोई बात ही नहीं है, इसीलिए मरकर रहो संसार में। अब तक बात किया, नुकसान में रहे कि फायदा हुआ? अपने से पूछो तो मौन हो जायेगा। ख्यालों से खाली, वादों की है आजादी। जो भी होता है मन के संकल्प से होता है। संकल्प से खाली मन है, शान्त है, वो ही निर्वासना होके मौज में रहेगा।

ज़रूरत के Time पर बोलना एक शब्द, या दुसरे की भलाई या दूसरे को Encourage करना ये भी मौन है। सच्चा होवे, प्यार होवे या बहुत ज़रूरी जोवे तभी हमारा एक शब्द निकले। मौन है सोन, तुम्हारी सदा मुस्कराहट की मौन हो। मौन में पाप नहीं होगा। किसी ने पूछा परमात्मा

की बोली (भाषा) क्या है, जवाब मिला मौन। बाहर की मौन देवता बनाती है, अंदर की मौन भगवान। मौन तीन प्रकार की हैः (1) कम बोलना (2) ज़रूरत के समय बोलना (3) Telegram की तरह to the point बोलना। आत्मा की बात करना भी मौन है। Silence is Gold, Speech is Silver. The greater silence is higher the state deeper than the Kingdom of death. मौन से Observation power भी बढ़ती है। बोलने से शक्ति भी कम होती है। बोलत बोलत भये विकार। पहले गुल से बात होगी, फिर इशारा, फिर मौन में पहुंचा।

ओम

ज्ञानी जो है ना तो अपनी मस्ती में चलता है, उसको डर नहीं है, ऐसे तुम भी हस्ती कौन सी रखेंगे? अभी जो हस्ती है वो देह अध्यास की है, Something मैं कुछ जानता हूँ, मैं कुछ करता हूँ, मैंने मदद किया, मैंने निष्काम किया, "मैं ने" निष्काम किया बोला तो ये भी पाप है, जहाँ मैं आ गयी तो खट्टाई आ गई दूध में। आसूरी स्वभाव वाला बोलता है मैंने ये किया, मैंने ये नहीं किया, पर Doerपना है उस Doerपने में तुमको शांति नहीं आयेगी और कर्म का फल भी उल्टा निकलेगा। पर जभी तुम Doer नहीं है, तुम उल्टा कर्म भी कर, पर उसका फल ठीक निकलेगा। हम झूठी Sign भी करें तो भी दण्ड नहीं है। अगर तुमको फल की इच्छा नहीं और तुम Doer नहीं है, तो तुम राजा हो सृष्टि के, मालिक हो। सच्चा निष्कामी कोई नहीं है, जो बोले मैं नहीं हूँ, परमात्मा ही कर्ता है। तुम बोलते हैं मैं आज निष्काम में गया, मैंने सतकर्म किया, मैंने अच्छा किया। तुम उसकी भलाई कर सकते हैं? वो भी प्रेरणा परमात्मा की है। परमात्मा अगर हमारे में प्रेरणा न डाले, शक्ति न डाले तो ये शरीर भी चल नहीं सकता है, उसकी प्रेरणा से सब हो रहा है। हम बोलते हैं कि मैंने किया, आपेही हम अपना Doerपना डालते हैं, तो बन्धन में आते हैं। सारी दुनिया बन्धन में है, Free कोई नहीं है। चाहे सतकर्म करे, चाहे बदंकर्म, अभिमान है। जहाँ मैं आई तो उल्टा फल ही निकलेगा! तुम भी किसका कितना भी निष्काम करो पर फल क्यों नहीं निकलता है, जितना हमारा एक शब्द से निकलता है। सतकर्म तो ऐसे बहुत करते हैं, तीर्थ तप और दान करे.....। गुमान माना मैंने किया, इतना तीर्थ घूमें चार धाम घूमें, अंधे को दें, सब करें पर देने वाला जीता है वो नहीं बोलता है कि परमात्मा की प्रेरणा से इधर पहुंचा। तुम बोलो किसको "मैं" नहीं आती है? जो मैं ना करे, अपनी हस्ती जो गुरु को देगा तो वो वापस में हमको शक्ति देगा, हस्ति मिटाने से शक्ति मिलती है। अगर हस्ती ना मिटाएं, वापस हम झुके ना, तो उठें कैसे? अभी हम झुकेंगे तो कोई गिरी हुई चीज़ उठाएंगे ना, ये सिर कहाँ झुकें? सबके आगे अहंकार करेंगे- माँ के आगे, बाप के आगे, कि मैं भी तो तेरी बेटी हूँ ना, मैं भी तो Contd.2

तेरा पति हूं ना। सब अपने को Title देते हैं, पर कभी ये बोला है- सब तू ही तो है, सब मैं ही तो हूं. एक ही तो परमात्मा के सब रूप हैं। तुम तो बोलेंगे मैं हूं। कोई ऐसी हस्ती मिटाके भगवान के आगे मैं ना मैं रहे, "मैं ना"। इधर भगवान है, मैं कौन हूं। तुम हरती मिटा नहीं सकते हैं क्योंकि झुकना तुमको आता नहीं। कहाँ तुम झुकेंगे, कहाँ फिर उठेंगे। जैसे सांप के 100 Face है। एक बंद हुआ तो दूसरा निकला, दूसरा बंद हुआ तो तीसरा निकला, ऐसे ही तो मन का सांप उठके खड़ा हो जाता है। कहाँ न कहाँ निकल आता है। पर हमेशा के लिए इसको "मैं ना" करने का है कि "मैं ना"। जो है सो है। जो ठाकुर सद सदा हज़ूरे ता को अन्धा जानत दूरे। हाज़ूर नाज़ूर Knower है, पर तुम दूर समझते हैं भगवान को। पर भगवान Near से Near है। उसको तुमने दूर किया है बोलते हैं दूर है बहुत, तपस्या करनी पड़ेगी। तपस्या तो एक ही है, अपनी हस्ती गंवानी है।

ओम

- ** कर्म करते हुए समाधि रखें अन्दर, न कोई उपाधि ।
** ज्ञान सुनकर अपनी शांति में बैठ जायें, ये ज़रूरी नहीं है, पर कर्म योग

ज़रूरी है। ऐसा कर्म होवे कि मैं Natural में चल रहा हूं।

- ** निष्काम होने रो तुम्हारे पहले वाले गलत कर्म भी खलास हो जाएंगे। निराकार को तुम्हारी पुकार पहुंचे तो वो ही तेरे घर को पवित्र करेगा।
** तुम अपने कर्म मेरे को दे दो। मैं तुम्हारे जन्म मरण का चिट्ठा फाड़ दूंगा। कौनसा भी कर्म करो ऐसा समझो कि मैं नहीं करता हूं। मैं करता हूं ये बड़ा सॉप है गले में। जितना तू अपने को जानेगा, उतना कर्म से छूटेगा। सब कर्म दुनिया में दोष वाले हैं। मैं अपने Self में रहूं। मेरे से कोई कर्म क्यों लगाए।

- ** तुम्हारे कर्म तभी कर्देंगे, जबी तू अपने जीवपने का मौत करेगा।
** समान दृष्टि के अंतर्गत कोई गलत कर्म नहीं होता। जगत में है पर है जगत से न्यारा।
** ज्ञानी इसीलिए झुकता है कि आगे वाला उसको देखकर कोई कर्म न बनाए।
** तुम जिधर भी बैठो Own में बैठो। चाहे ज्ञान किसी का भी सुनो, पर मैं

Own में हूं। वयन में मन है, पर मनुष्य में मन नहीं है। अगर मनुष्य में मन होगा, तो कर्म देखेंगे, पर अगर वयन में मन रखेंगे तो देह-कर्म कैसे देखेंगे।

- ** अभी ये शरीर चुरपुर में आता है, तो तुम उसको कर्म समझते हैं, पर ये कर्म नहीं, क्रिया होती है। शरीर ना करे तो Zinc लग जायेगी। दूसरे की सेवा किया तो कर्म किया, पर जे किसको भी अपना आप समझा तो दूसरा हुआ नहीं, तो कर्म भी नहीं हुआ।
** जिसने अपना लहम गंवाया है, फिर उसका एक२ कर्म पूजा हो जाता है।
** शरीर का जो भी वर्म होवे वह उसका है, तुम अपने को कहो मैं आत्मा

हूं, मेरा की? मैं आत्मा के सिवाय जो भी दिखता है सब माया है। भगवान को ना देखकर तुम कर्म करते हैं, उसमें देह अध्यास बढ़ता है। सब कर्म में दोष है। किसी के भी देह के कर्म Judge नहीं करना है, वरना हम देह अध्यासी हो जाएँगे।

** सारा दिन ये ध्यान दियो कि मेरा एक भी कर्म न बने। ये मन बुद्धि से हमने कर्म बनाया और फल भी भोगा। ये मन बुद्धि भगवान ने नहीं दिया है।

** Self को जानो फिर कर्म करना आवश्यक/ज़रूरी नहीं है।

** अंतरमुख होकर अपने विकार और कर्म को देखना है, फिर उसपे पछताना भी ज़रूरी है।

** तू ज्ञान से तरेगा, या कर्म से तरेगा? दुनिया सारी मूर्ख है, पर तू ज्ञान

से हलका होके बैठ।

** ज्ञान जैसे ही अन्दर उपलब्ध होगा तो पहलेवाला कर्म जल जाएगा। मनुष्य को अपने को Busy करने के लिए कर्म चाहिए। कोई एकान्त में बैठ सके, बिना कर्म के ये हिम्मत की बात है। स्थिरता नहीं है तो कुछ न कुछ करने को सोचता रहता है।

** ज्ञान अग्नि इतनी जले जो मेरा कर्म बने ही नहीं। तुम बोलता है कर्म का फल भोग रहा हूं, पर पाचे तत्व में Change आयेगी तो वो आपस

में बरत रहे हैं।

** हमको ना कर्म बनाना है, ना Emotion में आना है, मेरे से कोई द्वेष भी करे पर मेरे से भलाई ही भलाई होवे।

ओम

त्याग जे ताकत ते आहे मन जे मौजुनि जो मदारु। गुरु शरण में आकर, उसकी भक्ति और आङ्मा का पालन करके किसी चीज़ की इच्छा ना करना ही त्याग है। जितनी त्याग भावना होगी उतना अन्दर से Fresh होगा। ग्रहण करने में कमज़ोरी है, Weak रहेगा, त्याग में Freshness है।

** आत्माकार के लिए संसार सपने की तरह भासता है, इसलिए न कुछ त्याग के लायक समझता है और न ग्रहण के।

** ग्रहस्थ में रहकर त्याग भावना में रहने का है। तुम कैसे रहते हैं, मेरे को हैरानी लगती है। I may die that you may live. मैं मरूं, तुम जीओ, ये है ग्रहस्थ। पर तुम मैं-मेरा, मेरे बच्चे, मेरा मकान करते हैं। तुम बेगाने आसमान से थोड़ी आए हैं, जो अपने लिए इतना सोचते हैं, अपनी इतनी कद्र करते हैं। तुमको अपने को भूल जाने का है, तो सारी दुनिया तुम्हारी Value करेगी। घर की सेवा, आत्म पूजा करने दो सबको, बोलो जो आप बोलेंगे मैं करूंगा, तो देखो घर स्वर्ग हो गया। तो एक की त्याग भावना से सब त्याग भावना में आ गए। ऐसे तुम्हारे में से कौन है जो बोले तू बैठ, तू खा, मैं सेवा करूंगा। पर तुम बोलेंगे, इससे अलग रहना अच्छा है।

** तुम सब चीज़ इस्तेमाल करेंगे, जो भी चीजें हैं दुनिया की पर ऐसे चखें, बस, पर अन्दर थोड़ी गई। ऐसे हम सारी माया को चख कर फैंक देंगे। ये नहीं बोलो मैं ज्ञानी हूं, मेरे को ये नहीं करने का है, ये नहीं मांगने का है, ये नहीं खाने का है। ज्ञानी क्या? ज्ञानी में तो I know है ना। दूसरे को भी बोलता है मैंने त्याग किया है, तू क्यों नहीं करता है। सामने वाले को बोझ लगता है कि ये बकता है, क्यों? अभी तुम किसको बोलते हैं मैंने ये त्याग किया है तो वो बोलेगा मेरे से ये नहीं होगा।

** राजा जनक समझो बैठा राजाई में है, जन्म उधर हुआ है, पर उधर सब मिथ्या देखता है। मिथ्या-२ करके उसको Disinterest हो गई है। बैठा उधर ही है, बाहर से त्याग करके दुनिया को ठगता नहीं है। कितने लोग दुनिया को त्याग करके दिखाते हैं, मैं ने ये नहीं किया, वो नहीं किया। ये क्या बात है? मेरा नायका ही नहीं है तो मैंने क्या त्याग किया?

मेरे को बहन ही नहीं है तो मैंने क्या त्याग किया? तुम बोलेंगे मेरी बहन थी पर मैं नहीं गई। तुमको है तभी तुम बोलती है। मैं नहीं जाती हूं, मेरा नाता ही नहीं है। है वो Doer ना, ये ज्ञान का लक्षण नहीं है, बकना।

प्रेमी : त्याग उस चीज़ का होता है जिसमें आसक्ति होती है, नहीं तो त्याग की ज़रूरत ही नहीं है।

भगवान : त्याग किस चीज़े का करें? अभी ये शरीर है, इसको खाना भी चाहिए, बिस्तर भी चाहिए, हवा भी चाहिए तो उसमें क्या होगा? Normal Natural तो है ना, पर जो दूसरी तरह Normal Natural होगा तो ज्ञानी कहलाने के लिए होगा। झूठ लगा तब झूठ छोड़ा।

** हमारे ज्ञान में त्याग नहीं है। जिस चीज़ में Interest नहीं है, वो त्याग किया? सारी दुनिया से Interest निकल गई है, तो त्याग क्या करेंगे।

** अभी तुम घर छोड़कर आये तो त्याग क्या किया? जिधर Interest है उधर तो बैठे हो तो त्याग क्या किया?

** त्याग से बीमारी न होवे, पीड़ा न होवे। त्याग पीड़ा न होवे। त्याग की शक्ति से मौन आयेगी सच्चा त्याग है ज्ञानी दिन प्रतिदिन चमकेगा।

** त्याग भावना है कि मेरे को अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। लोगों को शक ही न होवे कि इसको कुछ चाहिए। चाहिए माना फकीर हुआ। सब कहेंगे कि ये तो त्याग भावना में है, सबकी भलाई में है, सबको प्यार करता है, पर उसको वापसी में अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए। घर में भाई बहनों में नाम होना चाहिए कि यह त्याग भावना में है।

** त्याग का Show नहीं करो पर ऐसे रहो Interest ही नहीं है।

** घर में जो झगड़े होते हैं तो तूं-मां में होते हैं, पर जो Possession है उसमें भी झगड़ा होता है। तुम त्याग भावना में रहो। बोलो जो बचे वो मेरे को देना। जो तुम्हारा मन चाहता है, जिसमें तुम्हारा आसक्ति है, उसे त्याग दो, वह वास्तविक त्याग है।

** द्वितीय में मैं-मेरा की भ्रांति का त्याग ही वास्तविक त्याग है। उत्तम त्याग है दिल गुरु को अर्पण करना। प्रारब्ध से जो कुछ मिलता है उसमें भी त्याग भावना होनी चाहिए। कोई अच्छी चीज़ मिलती है तो खुशी न आये।

** अन्दर में त्याग भावना होवे तो तुम्हें कोई जीत नहीं सकेगा। त्याग का

भी त्याग करो। यानी तुम शादी में नहीं जा रही हो तो ये त्याग नहीं हुआ, त्याग वो जो किसी को कुछ पत्ता नहीं चले।

** कोई भी शिष्य या गुरु काम में नहीं आयेगा, अपना निश्चय, त्याग, वैराग काम में आयेगा।

** त्याग करने भें भी Will Power आता है। अन्दर संकल्प विकल्प न आये। संकल्प विकल्प आया तो आसक्ति है। यहां सब सत्तगुरु के नज़दीक रहकर Knowledge लेते हैं। इनके यहाँ रहने से इनकी भी आसक्ति घटती है और इनके मोह वाले भी इनसे मोह निकालते हैं। बाकी न त्याग है न ग्रहण है। जे हमारे में त्याग भावना नहीं होगी तो रोशनी नहीं आयेगी।

** परम त्याग है मैं सब को आत्मा देखता हूं, फिर निरोग होकर जीता हूं।

ओम

प्रेमी : भगवान्, संत का शरीर शांत हो गया है, दृश्य नहीं भूलता है?

भगवान् : पति को ये संत बोलते हैं, तो वासना है। दृश्य मैं सारी दुनिया के देखते हैं तो मन थोड़ी आत्मा है। काहे के लिए मन आयेगा? काहे का दृश्य? है सब Picture जैसे उसमें Photo निकालते हैं तो वो क्या सच है? ऐसे समझो कि जो सारा दिन Photo देखते हैं वो सच्चा नहीं है या जैसे कोई भी Drawing निकालता है तो वो Photo निकालता है ना, वो सच थोड़ी है वो झूठ है। ऐसे समझो कि तुम्हारा भी पति जो है वो एक Drawing है, जो भगवान् ने निकाली है। जे पति सचमुच होवे तो मरे ही ना, दूटे ही ना। खिलौना है तो दूटेगा ना, पर तुम्हारा पति तो मिन्ट-२ में खड़े-२ चला जाता है तो फायदा क्या हुआ।

प्रेमी : भगवान्, ये आपने Right बोला कि भगवान् की Drawing है, उसको हमने पति नाम दे दिया।

भगवान् : संत! मैं पाण हैरान होते हैं कि ये संत किसको बोलते हैं। बोलते हैं दृश्य नहीं भूलता है। हम बोलते हैं दृश्य तो होगा वो भगवान् ने बैठ के Drawing निकाली है। तुम्हारी, तुम्हारे पति की, सब की, उस Drawing में हमारा क्या जाता है? तुम ऐसा समझते हैं कि भगवान् ने Drawing निकाली है?

प्रेमी : भगवान्, आज आपने नयी बात बताई कि Drawing है।

भगवान् : संच्ची बात है। आज T.V. में Minute में Drawing निकालते हैं, उधर भगवान् उससे भी अधिक तीखा है, जो सबकी Drawing निकालके सत् करके दे देता है, ये वरी सत् समझते हैं।

प्रेमी : उस Drawing को लेकर हम कभी रेल में हैं, कभी जेल में हैं, एक रस नहीं रहते हैं?

भगवान् : रेल में हैं, जेल में हैं। कभी खुशी में हैं, कभी रंज में है। तू है ना या Drawing है। तू तो Drawing है ना, तो तू क्यों रोती है या हँसती है। जो रोते हँसते हैं तो समझो Drawing में Part हो रहा है, पर मैं नहीं कर रहा हूँ।

प्रेमी : भगवान्, Drawing की बात आप फिर से बताइए, हम अच्छी तरह समझना चाहते हैं।

Contd...2

भगवान : मैं ने जो Drawing की बात बोली, तुमने नहीं समझी? भगवान बैठके Photo निकालता हैं, तो Photo को लेके तू बोलती है, मेरी Photo मेरे पति की Photo, मेरे संत की Photo। संत कौनसा? ये संत रखके सच्चा संत विसरा दिया है।

तुमको शांति आ जाए अगर बैठके Drawing देखो कि भगवान कैसे बैठके लाखों Photo निकालता है, सब Drawing है। कोई बच्चा पैदा होता है तो वो जैसे Drawing है, सब Drawing है, पर कोई समझता नहीं है।

प्रेमी : भगवान, Drawing किस की सत्ता पर वर्णी है?

भगवान : वो तो एक ही बात है Isness, दूसरी बात नहीं है।

Isnessमाना है।

प्रेमी : भगवान, सब कुछ अगर Drawing ही है तो किस Time पर किस को क्या शब्द देना चाहिए, जो उसकी Life बने?

भगवान : तुम शब्द क्यों देते हैं? तुम वाणी चलाओ तो जिसको जो उठाना होगा तो उठायेगा। तुम वाणी चलाओ सच की। भेद भाव नहीं रखो, आगे वाला कुछ भी उठाए उस में तेरा की? जैसे मैं वाणी चलाते हैं तो मैं किसकी शक्ति भी नहीं देखते हैं कि इसने क्या किया, क्या उठाया, भली ना उठाए। तुम ऐसे देखेंगे तो हिसाब किताब हो जाएगा फिर Drawing नहीं होगी। मैं पाण बोलते हैं ना कि मैं Drawing समझते हैं तो किसको भला बुरा बोलते नहीं हैं, पर जो वाणी चलती है वो बीच में चलती है सबके लिए। किसको कम जास्ती क्यों समझे? समझा। A-B-C-D नहीं देखो, देखेंगे तो तुम्हारा मन चलेगा, देखेंगे ही नहीं तो मन काहे को चलेगा?

प्रेमी : भगवान, मान अपमान की लकीर अभी तक आती है।

भगवान : Drawing को कौन सा मान अपमान लगता है।

प्रेमी : भाव है कि ज्ञान स्वरूप पर वाणी चले।

भगवान : ज्ञान स्वरूप की ही तो वाणी चली है कि सब Drawing है। मैं भूलते हैं क्या? कोई सवाल पूछता है तो हम उसको बताते हैं, तुम ये बात बता सकेंगे? तुम नाम रूप बोलेंगे, जगत की बात करेंगे, ये बात करेंगे, वो बात करेंगे। मेरी बात समझो तुम, तुम बोलते हैं मान अपमान लगता है,

हमने बोला जाके Drawing को बताओ, मान अपमान लगता किसको है? Drawing को?

प्रेमी : भगवान्, अहम् को।

भगवान् : अहम् भी क्यों बोला। तुम फिर नीचे आ जाते हैं। मैं उपर की बात करते हैं ये फिर नीचे की बात करते हैं। अहम् किसको आता है। ये तुमने नाम रूप रखा ना! अहम् लिखा थोड़ी पड़ा है, किधर लिखा है? मैं तो बोलते हैं ही Drawing। ये बोलते हैं न मान अपमान लगता है, मैं बोलते हैं Drawing को दे दियो।

प्रेमी : भगवान् Auto Suggestion देना पड़ता है कि सब Drawing है।

भगवान् : कुछ भी करो पर आखिर तुमको उधर पहुंचना है। उसी बात पर पहुंचना है, नहीं तो तुम दुखी सुखी होते हैं, मान अपमान लगता है। सब होता है। इसलिए Drawing को Drawing दे दियो। मैं बोलते हैं तुमको Drawing शब्द अच्छा लगता है।

प्रेमी : भगवान्, बहुत Fit हो गया है।

भगवान् : सब हैरान हो गए हैं कि सब घरवालों को Drawing कैसे देखेंगे।

प्रेमी : भगवान्, Drawing सुनकर एकदम शांत Still हो जाते हैं। Drawing में तो केवल चुप है, कोई शब्द ही नहीं है।

भगवान् : नहीं पर तुम दृश्य जभी देखते हैं तो भूल जाते हैं। इसलिए दृश्य देखो ही नहीं, Drawing देखो।

प्रेमी : भगवान्, मैं ब्रह्म हूं, मैं आत्मा हूं, ये Feeling में नहीं आता है सिर्फ शब्दों में पक्का है।

भगवान् : क्यों कि Drawing नहीं समझा है।

प्रेमी : भगवान्, जभी मन आए तो Drawing ही समझ लें ना।

भगवान् : जो भी समझो।

प्रेमी : भगवान्, ये अंदर पक्का कैसे होवे कि सब Drawing ही है।

भगवान् : अच्छा तुम Drawing नहीं समझेगा तो क्या समझेगा। अभी एक माई के Hall में आदमी की Drawing का Photo रखा था तो वो(सास) बोलती है बहू को ऐसा Photo क्यों निकाला जो मैं ज़र्र-२

[4]

देखकर दुखी होती हूँ, जलती हूँ। तो दुखी क्यों होती है, जाभी है ही Drawing? ये क्या Drawing है? अप्राप्ति के Photo विकल्प हैं, पर हन आरिक नहीं होते।

अन

"मारि ध्यनि सां तां मूं विसिरे ।"

भजन चला - आउं न थियां आज्ञाद कदहिं शल

भगवान : ये सिन्धी में भजन है पर तुम को समझना है, मैं बोलें कि मैं जाते हैं तो वो मैं क्यों बोली? मैं आते हैं तो मैं क्यों बोली? कौन सी मैं बोली? क्यों मैं बोलें वो बताओ?

प्रेमी : भगवान आपने बताय कि "मैं" नहीं करो पर हम को तो बोलने में आ जाता है कि I am that.

भगवान : तुम ये जुबान बंद करि दियो जो अपनी "मैं" बताओ जैसे मैंने अभी बोला ना "मैं" आउंगी, "मैं" जाउंगी, "मैं" ने ये बताया, "मैं" ने ये बोला, तो यह देह कैसे विसारी? ये अच्छी बात नहीं है। "मारि ध्यनि सां तां मूं विसिरे ।" वो बोलता है गुरु हाथों से मारे तो "मैं" भूले पर हम ज्ञान से बोलते हैं "मैं" है किधर? कौनसी "मैं"? कौन बोले "मैं"?

प्रेमी : गुरु ने "मैं" खलास किया, फिर ये "मैं" उत्पन्न कैसे हो जाती है?

भगवान : मर जाये ना, "मैं" बोलना पाप लगे, "मैं" आयी, "मैं" गयी, "मैं" ने खाया, "मैं"-६, तो फिर "मैं" कैसे विसारी हमने? ये मेरी बात समझो कि कैसे तुमने "मैं" विसारी? "मैं" तो खड़ी ही है। ये बोता है ना, ये तो घरवालों ने दनाया और नाम रखा, अभी तक नाम हमने भुलाया नहीं है और ये भूत को भूत भी नहीं भूलता है(शरीर)। ये भूत को भूत करके रख दियो, "मैं" बोलते हैं क्या सारा दिन "मैं"-६। शुद्ध "मैं" तो चुप है बाकी "मैं" जो है ना वो निकलती है। हैरानी की बात है जो हाथों से मारे तो "मैं" विसरे तो "मैं"-२ बोलूँ कैसे? मैं बोलते हैं तो जीभ जैसे कटती है। मैं एवं मेरा, मैं ने ये किया, मैंने वो किया। ये मेरा ये तेरा। इधर सब जो हैं तुम किसको पकड़ते हैं कि यह मेरी मां है, यह मेरी बहन है।

प्रेमी ∴ भगवान गुरु के पास जो नाम मिला है 'ओहम्' I am that, वो क्या शुद्ध हैं?

भगवान : नहीं। शुद्ध मैं है, पर बकने के लिए नहीं है। शांत करने के लिए है। शुद्ध मैं एक आधार है कि वो "मैं" (छोटी(i)) छोड़के ये मैं भइँड़े पर मनुष्य देह से उसको लगा देता है। भजन में है कैद करीं त नियां...।

पंछी को हाथ में बंद करो तो फथकेगा या नहीं, हम भी किसी को बोलें कि ये त काम कर, इधर रहो, ये खाओ, ये करो, तो वो समझेगा कि मैं इधर आकर फँस गया हूं। फँसा हूं तो अभी मैं क्या करूं? फँसा है तो फथकेगा। ऐसे फथकता है मनुष्य। गुरु के पास भी खुश नहीं रहता है। पंछी को तुम ऐसे पकड़ो तो पंछी सॉस उठाएगा, बोलेगा ना कि छोड़ो। ऐसे ही गुरु अगर तुमको पकड़े तो तुम बोलते हैं कि हमको छोड़ो। हमारे घरवाले फलाणे, टीड़े-गटीड़े के पास हम जाएंगे। शांति नहीं आएगी ये है फथकता। पर वो बोलता है भजन में कि मैं आजाद न होउं। सच्चा भगत पाण बोलता है कि मैं आजाद न रहूं। मैं Free पर रहूं, पर झूठा भगत बोलता है कि छोड़ो तो मैं धूमूं फिरूं। गुरु पकड़े तो वो बोलता है मेरे को ये याद आया, वो याद आया, क्या याद नहीं है?

प्रेमी : भगवान् I am that बोलना भी जीव भाव से बोलना है क्या?

भगवान् : हाँ।

प्रेमी : अगर दृष्टा है तो दृश्य भी है, तो दृष्टा होना माना हमारा Connection कहीं न कहीं दृष्ट्य से है?

भगवान् : तू बोलता है न हमारा Connection, हमारा क्यों बोला। ये ही तो मैं पकड़ते हैं कि तुम मैं नहीं करो। तुम सुनो चुप करके सुनो पर तुम हमारा तुम्हारा नहीं करो।

प्रेमी : भगवान् भजन में पंजतूल की Meaning क्या है?

भगवान् : पंजतूल माना जैसे ये पॉच अंगुली है जो तू उसमें पकड़े जाते हैं। (माना पंजा)।

प्रेमी : आज ये समझा कि छोटी (i) में बक-२ है, Capital(l) चुप है।

भगवान् : चलो किसी ने तो वचन लिया।

ओम